Official Periodical of Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi

श्री साईं बाबा संस्थान विश्वस्त-व्यवस्था, शिर्डी की अधिकृत पत्रिका

SHRI SAI LEELA

श्री साईं लीला

January-February 2017 ₹ 8/-

जनवरी-फरवरी २०१७ ₹ ८/-

In the morning of Sunday, January 1, 2017

In the afternoon of Sunday, January 1, 2017

SHREE SAI BABA SANSTHAN TRUST (SHIRDI)

Management Committee

Dr. Suresh Kashinath Haware (Chairman)
Dr. Manisha Shamsunder Kayande (Member)
Sri Sachin Bhagwat Tambe (Member)
Sri Pratap Sakhahari Bhosle (Member)
Sri Bhausaheb Rajaram Wakchaure (Member)
Sri Ravindra Gajanan Mirlekar (Member)
Sou Yogitatai Shelke (Member)
Sri Chandrashekhar Laxmanrao Kadam (Vice Chairman)
Adv. Mohan Motiram Jaykar (Member)
Dr. Rajendra Rajabali Singh (Member)
Sri Bipindada Shankarrao Kolhe (Member)
Sri Amol Gajanan Kirtikar (Member)

Internate Edition - URL:http://www.shrisaibabasansthan.org

श्री साईं लीला

स्थापित वर्ष १९२३

वर्ष १७ अंक १

सम्पादक : कार्यकारी अधिकारी

श्री साईं बाबा संस्थान विश्वस्त-व्यवस्था (शिर्डी)

SHRI SAI LEELA

Estd. Year 1923

Year 17 Issue 1

Editor : Executive Officer

Shree Sai Baba Sansthan Trust (Shirdi)

अंतरंग

- SAI AMBULANCE PROJECT 2
- साईं लीला; कल, आज और कल... : दास कुम्भेश ४
- SAI EXPERIENCES 8
- पालकी... लेकर चलते चलें... मुख से ''साईं राम''... ''साईं राम''... कहते चलें।।... १४
- साईं अनुभव १९
- साईं के लिए गुलदस्ता! : विजय कुमार श्रीवास्तव २२
- दास कबीरा भर-भर पिया, और पीवन की आश : मदन गोपाल गोयल २४
- Shirdi News 26

● Cover & other pages designed by **V. Kartik, Prakash Samant** ● **Computerised Typesetting:** Computer Section, Mumbai Office, Shree Sai Baba Sansthan Trust (Shirdi) ● **Office :** 'Sai Niketan', 804-B, Dr. Ambedkar Road, Dadar, Mumbai - 400 014. Tel. : (022) 24166556 Fax : (022) 24150798 E-mail : saidadar@sai.org.in ● **Shirdi Office :** At Post Shirdi - 423 109, Tal. Rahata, Dist. Ahmednagar. Tel. : (02423) 258500 Fax : (02423) 258770 E-mail : 1. saibaba@shrisaibabasansthan.org 2. saibaba@sai.org.in ● **Annual Subscription: ₹50/-** ● **Subscription for Life : ₹ 1000/-** ● **Annual Subscription for Foreign Subscribers : ₹1000/-** (All the Subscriptions are Inclusive of Postage) ● **General Issue: ₹ 8/-** ● **Shri Sai *Punyatithi* Special Issue : ₹15/-** ● Published by Executive Officer, on behalf of Shree Sai Baba Sansthan Trust (Shirdi) at Sai Niketan, 804-B, Dr. Ambedkar Road, Dadar, Mumbai - 400 014 and printed by him at Taco Visions Pvt. Ltd., 105 A, B, C, Government Industrial Estate, Charkop, Kandivali (West), Mumbai - 400 067. The Editor does not accept responsibility for the views expressed in the articles published. All objections, disputes, differences, claims and proceedings are subject to Mumbai jurisdiction.

SHREE SAIBABA SANSTHAN TRUST, SHIRDI

SAI AMBULANCE PROJECT

Humble Appeal to Sai Devotees

SAI AMBULANCE PROJECT

A PROJECT CALLED 'SAI AMBULANCE' PROVIDING EMERGENCY HEALTH SERVICES TO THE NEEDY PATIENTS IN THE RURAL AND REMOTE REGIONS OF MAHARASHTRA

Shri Sai Baba, in His incarnation, has served, nursed and cured many sick people. The Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi has been taking all efforts to continue providing the services to the patients the way He did. Today, two hospitals, namely 'Shri Sai Baba' and 'Shri Sai Nath' at Shirdi provide medical services at reasonable rates.

In order to carry on the work of providing health care, and to expand it further, the Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi, along with kind donors and devotees, has decided to start a scheme for providing emergency health care to the needy, poor and deprived patients in the rural and remote regions of Maharashtra by donating ambulances to the NGOs (Non-Government Organization) working in those regions. In order to implement this scheme, 500 ambulances are required. For this, it has been decided that 75% of the cost will be collected from philanthropic Sai devotees who are willing to contribute and the rest 25% from the NGOs.

The ambulances donated through this scheme will be termed as 'Sai Ambulance' all over Maharashtra, and their functioning as well as maintenance will be looked after by the social service organizations which are willing to participate in this noble scheme. Donor Sai devotees can make this donation in memory of their parents/relatives/loved ones, on their birthdays or other occasions. The name of the donor making more than 75% share of the total cost of one ambulance will be displayed on the ambulance along with the Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi. Besides this, those who want to contribute voluntarily can also donate as per their will.

The Sansthan appeals the donors to make a payment by cash, cheque, demand draft, or pay online on the Shree Saibaba Sansthan's official website (www.online.sai.org.in)

All the devotees are requested to make contribution with all the fullness of their heart to the above-mentioned scheme of 'Sai Ambulance'.

COST OF ONE AMBULANCE

Sr. No.	Proposed Ambulance	Amount (Approx.)	75% of the cost (Share of Sai devotee)	25% of the cost (Share of N.G.O.)
01.	Mahindra Bolero (Diesel) Non A/C	4,72,000/-	3,54,000/-	1,18,000/-
02.	Mahindra Bolero (Diesel) A/C	5,00,000/-	3,75,000/-	1,25,000/-

हे साईं!

तुम्हें तो याद ही होगा! महासमाधि लेने से पहले तुमने कहा था, तुम्हारी देह नहीं रहेगी, पर तुम्हारा निर्गुण तत्व सदा विद्यमान रहेगा। तुम सर्वदा अपने भक्तों की रक्षा करोगे। विशेष रूप से, जहाँ भजन–कीर्तन होंगे, तुम्हारी लीला–कथाएँ होंगी, वहाँ तुम ज़रूर मौजूद रहोगे। जो भक्त श्रद्धा–प्रेम पूर्वक तुम्हारी लीला–कथाएँ सुने–सुनायेंगे, तुम उनकी बुद्धि और मन निर्मल करोगे, उनका सब तरह से भला करोगे। कहा था न! मुझे पता है, तुम कभी झूठ नहीं बोलते। तुमने जो भी कहा, कभी झूठ नहीं हुआ। मैं तुम्हारी लीला–कथा तुमको ही सुनाऊँगा; तुममें सब जन व्याप्त है। हे सबके मालिक, सुनते हो ना! लेकिन बाबा, कौन–सी कथा सुनाऊँ? तुम्हारी लीला तो अपार है। लीलाएँ अनंत हैं। और मैं ठहरा एक अदना, अबोध प्राणी। पर, तुम्हारी कृपा से क्या नहीं हो सकता? पंगु भी पहाड़ चढ़ जाता है। मुझ पर कृपा करना, साई माँ!

तुम्हें याद है न? तुम शिरडी की मसजिद में रहते थे, जहाँ तुमने हाथ की चक्की चलाई थी, गेहूँ पीसा था। शिरडी ग्रामवासियों को यह देख कर बड़ा अचरज़ और कुतूहल हुआ था। तुम तो भिक्षा लेकर खाते थे। तुम्हारा कोई घर–परिवार भी नहीं था। फिर, तुम्हें चक्की चलाने की क्या ज़रूरत आन पड़ी? किसके लिए आटा पीस रहे थे? तुमसे कुछ पूछने की हिम्मत भी किसी में नहीं थी। तभी, दर्शकों की भीड़ में से चार निडर स्त्रियाँ निकल कर आगे आईं और तुम्हारे हाथ से चक्की छीन कर गेहूँ पीसने लगीं। बड़ी हिम्मत वाली रही होंगी वे महिलाएँ! वरना, शिरडी में तुम्हारी चरण–सेवा करने के लिए भी भक्तों को तुमसे आज्ञा लेनी पड़ती थी। काश! मैं भी उन भाग्यवान् महिलाओं के बीच होता! उनकी तरह मुझे भी तुम्हारी सेवा करने का अवसर मिलता, तुम्हारी उस परम, पवित्र, दिव्य चक्की के स्पर्श का सौभाग्य मिलता! लेकिन सबके ऐसे भाग्य कहाँ? ख़ैर!

चारों महिलाएँ चक्की चला रही थीं और तुम उन्हें देख कर मुस्करा रहे थे। क्यों मुस्कुरा रहे थे, बाबा?

साईं लीला; कल, आज और कल भी...

समझा! तुम अंतर्यामी जो हो! उनके मन की बात जान गये होंगे! जान गये होंगे कि वे सोच रही थीं कि तुम परम दयालु हो। तुम अपने लिए नहीं, बल्कि दूसरों को बाँटने के लिए आटा पीसने की मशक्कत कर रहे थे। सचमुच, वैसा ही हुआ, जैसा तुम पहले से जानते थे। उन चारों ने आटा पीस कर, उसके चार भाग बनाये, और एक-एक भाग अपने आँचल में भर कर मसजिद से बाहर जाने लगीं। तब तुमने उन्हें डाँटा, 'कहाँ जा रहीं हो, यह आटा लेकर? रुको, इसे यहीं रख दो।' उसके बाद तुमने सब आटा शिरडी गाँव की मेंड़ पर बिखेरवा दिया।

फिर क्या हुआ, मुझे पता है। उन दिनों हैज़ा की महामारी फैली हुई थी न! बेचारे शिरडी ग्रामवासी बहुत परेशान और दुखी थे। तुमने जो आटा पीसा था, असल में वह आटा नहीं, विषूचिका थी, हैज़ा था, जिसे तुमने चक्की में पीस कर नष्ट कर दिया था। तब से शिरडी ग्रामवासी सुखी हो गये थे।

साईं राम! तुम कितने दयालु हो। दुखियों का दुख हरने के लिए कैसी-कैसी लीलाएँ करते हो! पर, यह लीला मेरी समझ में नहीं आई। मैंने डाक्टरों से पूछा, वैज्ञानिकों, विद्वानों से पूछा कि बताये तो कोई, गेहूँ, आटा और हैज़ा, इनका आपस में क्या संबंध है? सबने कहा, कोई संबंध नहीं। गेहूँ के आटे से न तो हैज़ा की रोकथाम होती है, न ही उसके रोगी का इलाज हो सकता है। तो फिर, बाबा, तुमने कैसे किया? अब, तुम्हारी लीला, तुम ही जानो! जो बात मनुष्य की बुद्धि से परे हो, उसी को तो कहते हैं, चमत्कार, ईश लीला! और शिरडी में उस वक़्त तुम्हारे सिवाय और कौन था, ईश्वर, परमेश्वर, अनंत कोटि ब्रह्माण्ड नायक, परब्रह्म श्री सच्चिदानंद!

साईं नाथ महाराज! तुम शिरडी में साठ वर्ष तक रहे, और इस दौरान चक्की चलाने का कार्यक्रम लगभग प्रतिदिन करते रहे। तो क्या, तुम प्रतिदिन अपने भक्तों के दुख, रोग, ताप, पाप, अभाग चक्की में पीसा करते थे। जय हो, बाबा साईं! तुम कितने दयालु हो! अपने भक्तों के लिए कितने कष्ट उठाते थे! आज भी उठाते हो! मेरे दुख-दर्द, पाप-ताप भी पीस दो न, साईं नाथ!

अपनी चक्की में साईं,
मेरे दुख दर्द पीस दो...

गेहूँ पीसा तुमने,
भक्त जनों का भला किया;
महाकाल हैज़ा भी,
शिरडीपुर से दूर किया...

विकार सब मेरे मन के,
गेहूँ के संग पीस दो;
अपनी चक्की में साईं,

मेरे दुख–दर्द पीस दो...
दाने जैसा पीसे,
हमको इस भव की चक्की;
तुम हो भवदुखहारी,
गहें शरण क्यों औरों की...
अभाग मद अवगुण मेरे,
जनमों के पाप पीस दो;
अपनी चक्की में साईं,
मेरे दुख–दर्द पीस दो...
पाप पिसेंगे मेरे,
बिगड़ी भी बन जायेगी;
शरण मिले जो तेरी,
मुक्ति आप मिल जायेगी...
बैरी घुन बैर भेद के,
घुन ये विषैले पीस दो;
अपनी चक्की में साईं,
मेरे दुख–दर्द पीस दो...
अद्‌भुत चक्की तेरी,
दण्ड ज्ञान की मुठिया है;
पाट भक्ति का ऊपर,
कर्म पाट जो निचला है...
छूटे ना प्रभु यह मुठिया,
भगती सत्कर्म संग हो;
अपनी चक्की में साईं,
मेरे दुख–दर्द पीस दो...

हे साईं!

अब मैं तुम्हें तुम्हारे एक भक्त का अनुभव सुनाता हूँ। सुनोगे न? तुम्हारे भक्त का अनुभव भी तुम्हारी ही लीला तो है। हिम्मतसिंह राजपूत को तो तुम जानते ही होंगे। यह भक्त छत्तीसगढ़ के राजनांद गाँव में डोंगर गाँव का रहने वाला है। उसके साथ एक विचित्र घटना हुई। सन् उन्नीस सौ तिरानबे में आषाढ़ मास के एक दिन वह अपनी जीप से परिवार के साथ डोंगरगाँव से तुम्हारे दर्शन करने शिरडी जा रहा था। उसके साथ उसकी पत्नी उमा, दो छोटी बेटियाँ, गरिमा और महिमा, दो सालियाँ, शारदा और शिरोमणि, शारदा के दो बच्चे, सोनू और मोनू, भतीजा विजय और घर में काम करने वाली ढेलाबाई थी। औरंगाबाद और बैजापुर के बीच, रास्ते में अचानक ढेलाबाई पर शौच का दबाव पड़ा। सूनसान रास्ते में एक जगह ढाबा देख कर हिम्मतसिंह ने जीप रोक दी। ढेलाबाई जीप से उतर कर तेजी से ढ़ाबे के पीछे चली गई।

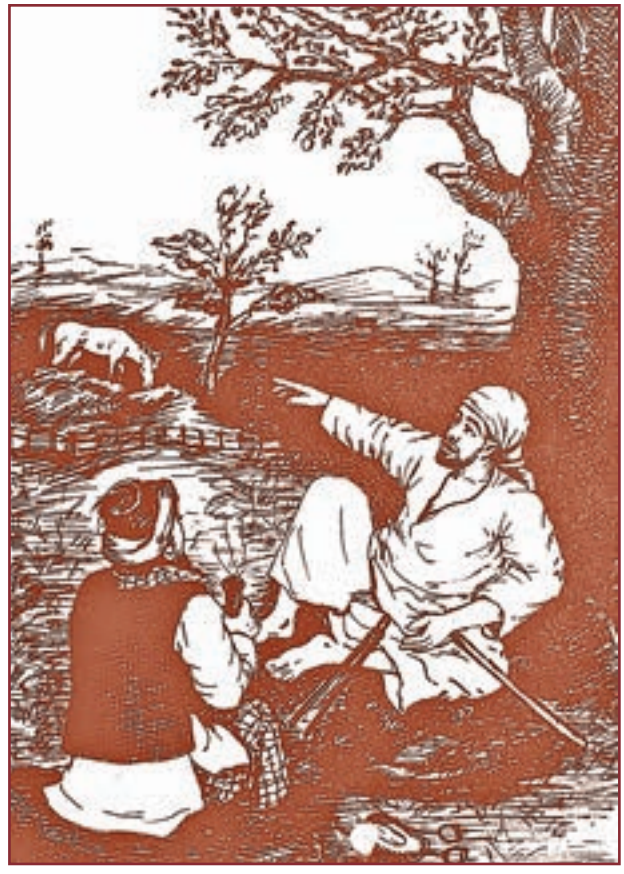

हिम्मतसिंह, अपनी साली शिरोमणि को पानी के साथ ढ़ाबे के पीछे भेज कर, परिजनों के साथ जलपान करने लगा। तभी, ढ़ाबे के पीछे से शिरोमणि घबरा कर चिल्लाई, 'ढेला दीदी तो यहाँ नहीं है।' उसकी आवाज़ सुन कर सब ढ़ाबे के पीछे गये और इधर–उधर देखने लगे। चारों तरफ़ खेत ही खेत, सपाट मैदान था। पर, ढेलाबाई कहीं दिखाई नहीं दे रही थी। ढ़ाबे का मालिक भी घबरा गया। ऐसी विचित्र अनहोनी तो वहाँ पहले कभी नहीं हुई थी। दो मिनट में वह स्त्री अचानक कहाँ ग़ायब हो गई? सब मिल कर उसे चारों तरफ़, दूर–दूर तक, दौड़–दौड़ कर ढूँढने लगे। पर, वह नहीं मिली!

साईं नाथ! हिम्मतसिंह रुआँसा हो उठा। ढेलाबाई नौकरानी भले ही थी, पर उसकी माँ जैसी थी। हिम्मतसिंह के दिल में बड़ी दया थी, बिल्कुल तुम्हारी तरह! वह कोई भी हो, आख़िर तो एक जान थी, इंसान थी। तुमने तो हर जीव–जंतु, पशु–पक्षियों पर भी दया की है, दयानाथ!

हिम्मतसिंह की समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था। ढेलाबाई दो मिनट में कहाँ ग़ायब हो गई? ज़मीन खा गई या आसमान निगल गया। आख़िरकार, उसने ढ़ाबे के मालिक की मदद से पास की पुलिस चौकी में इस घटना की जानकारी दी। पुलिस वालों ने घटना–स्थल पर

आकर बहुत खोजबीन की, पर सब बेकार! ढेलाबाई कहीं नहीं मिली।

हे दीनदयाल साईं! कभी–कभी तुम इतने कठोर क्यों हो जाते हो? हिम्मतसिंह और उसका परिवार तो तुम्हारा ही दर्शन करने शिरडी जा रहा था। फिर क्यों उन्हें इस संकट में डाल दिया? क्या उनकी परीक्षा ले रहे थे? ऐसी कठिन परीक्षा न लिया करो, नाथ! भक्त बड़े कोमल होते हैं। उनकी श्रद्धा–सबूरी टूट गई, तो बिचारे कहाँ जायेंगे? पुलिस वालों ने ढेलाबाई को ढूँढने का भरोसा देकर हिम्मतसिंह को परिवार के साथ रात भर के लिए बैजापुर के एक होटल में ठहरने का सुझाव दिया। हिम्मतसिंह ने अनमनेपन से उनका सुझाव मान तो लिया, पर उसे उन पर बिल्कुल भरोसा नहीं था। वह पूरी तरह हताश–निराश हो चुका था। पर, उसे अब भी तुम पर भरोसा था, साईं नाथ! इसीलिए, रात के समय होटल के कमरे में उसने तुमसे प्रार्थना की, 'हे साईं प्रभु! मुझसे क्या भूल हो गई? भूले से कभी कोई भूल हो गई हो, तो क्षमा कर दो, देवा! मेरी ढेलाबाई खो गई है। उसे मुझसे मिलवा दो। जैसे, कभी यहीं धूपगाँव के चाँद पाटिल की घोड़ी खो गई थी, तब तुम्हीं ने उसे उसकी घोड़ी दिलवाई थी। मैं चाँद पाटिल तो नहीं, मुझे अपना एक अदना–सा दास समझ कर मेरी मदद करो, बाबा!'

हे साईं नाथ हिम्मतसिंह के मुँह से यह प्रार्थना निकली ही थी कि दो पुलिस वालों ने होटल में आकर शुभ समाचार दिया कि ढेलाबाई मिल गई है। सब तुर्तफुर्त पुलिस थाने पहुँचे, जहाँ ढेलाबाई बैठी हुई पुलिस को अपना बयान दे रही थी। उसने बताया कि वह ढाबे के पीछे नाले के पास शौचक्रिया के बाद अचानक रास्ता भूल गई, और भटकते–भटकते एक स्थान पर पहुँची, जहाँ सफ़ेद पोशाक में सफ़ेद दाढ़ी वाला एक फ़क़ीर कुछ लोगों के सामने तकरीर (प्रवचन) कर रहा था। उसने फ़क़ीर को बताया कि वह अपने लोगों से बिछड़ गई है, दया करके उसकी मदद करें। फ़क़ीर उसका हाथ पकड़ कर पुलिस चौकी तक ले आया और बोला, 'भीतर जाओ, भीतर तुम्हें तुम्हारे अपने लोग मिल जायेंगे।' ढेलाबाई ने पुलिस चौकी के भीतर जाते हुए कृतज्ञ दृष्टि से एक बार पलट कर फ़क़ीर की ओर देखा, तो फ़क़ीर वहाँ नहीं था।

वह कौन था, बाबा? कहीं वह फ़क़ीर तुम ही तो नहीं थे? किसी ज़माने में कुछ समय के लिए शिरडी छोड़ कर तुम इसी जगह औरंगाबाद के रास्तों में कभी इस पेड़ के नीचे, तो कभी उस पेड़ के नीचे वास किया करते थे। तब तुमने चाँद पाटिल की खोई हुई घोड़ी दिला कर उसकी मदद की थी। आज हिम्मतसिंह की खोई हुई ढेलाबाई दिला कर उसकी मदद की। है न! लेकिन, बाबा, पुलिस वालों को ढेलाबाई की बातों पर विश्वास नहीं हो रहा था। उनका कहना था कि वह अपने बयान में जिस नाले का ज़िक्र कर रही थी, वह ढाबे से दो किलोमीटर दूर था। दो मिनट में ढाबे से दो किलोमीटर दूर कोई कैसे जा सकता था, और शौच के लिए इतनी दूर क्यों जायेगा? दूसरी बात... ढेलाबाई के बताये हुलिये वाला कोई फ़क़ीर उस इलाके में नहीं था, और न ही वहाँ कोई तकरीर (प्रवचन) करने आया था।

बाबा! कोई माने ना माने, पर तुम्हारे भक्त, हिम्मतसिंह को पूरा यकीन था कि ढेलाबाई सच बोल रही थी, और वह फ़क़ीर कोई और नहीं, तुम ही थे, तुम ही ने उसकी मदद की थी। तभी तो इतनी परेशानी झेलने के बावजूद वह अपने गाँव नहीं लौटा। वह शिरडी गया और कृतज्ञ होकर सच्चे मन से तुम्हारे दर्शन किये। तो फिर, ऐसे श्रद्धालु, तुम पर इतना प्रेम और विश्वास रखने वाले भक्त को तुमने परेशान क्यों किया, बाबा? बताओ! बोलो न, बाबा? आजकल तुम कुछ बोलते भी नहीं? बस, चुपचाप सुनते रहते हो! तुम बोलो या न बोलो; लेकिन मैं समझ गया। असल में हिम्मतसिंह की पत्नी उमा ने शिरडी यात्रा के दौरान मन ही मन तुमसे कहा था कि हे साईं महाराज, तुम्हारे चमत्कारों की कई कहानियाँ सुनी हैं! कोई एक चमत्कार हमें भी दिखाओ, तो हम भी माने! और बस, इतनी–सी बात पर तुमने उन्हें अपनी लीला दिखा दी। ढेलाबाई को ग़ायब करके कुछ समय के लिए उन्हें परेशान ही कर दिया और फिर सब ठीक–ठाक भी कर दिया।

जय हो लीला धर साईं!

अगली बार मैं तुम्हें तुम्हरी एक और लीला सुनाऊँगा। तुम्हारे एक भक्त का बहुत ही रोचक अनुभव भी सुनाऊँगा। तुम्हारे भक्तों के अनुभव भी तुम्हारी ही लीला है, साईं नाथ! सुनोगे न?

(क्रमशः)

– दास कुम्भेश

बी–२०३, जूही, सेक्टर २, वसंत नगरी, वसई (पूर्व),
पालघर – ४०१ २०५, महाराष्ट्र.
ई–मेल : **kumbhesh9@gmail.com**
दूरभाष : **(०२५०)२४६०१००**
संचार ध्वनि : **(०)९८९०२८७८२२**

Faith knows no bounds of caste and religion

"You should take pains, but give up worrying about the results completely. I am present, standing behind you and carrying the pot of milk (to give you the fruits). Thus I am always backing you. But, if you think that that I should exert and you should only drink the milk abundantly, I will not agree with this. On the contrary, you should be alert and perform the actions. Be active and work for it." (Shri Sai Sat Charita, Chapter 19, Verses 158-159)

By stating this meaning in the metaphor of milking (putting efforts), and He standing with a vessel full of milk, Sai Baba wants us to understand that we need to work hard, sincerely, genuinely, putting our soul into the task and with the right intention, then naturally, we get the desired fruit of action.

"As you sow, so shall you reap."
(Shri Sai Sat Charita, Chapter 19, Verse 210)

This notion of *karma* is what Sai Baba would often propagate. We all experience His miracles many times and realize the truth

"If one inculcates the true meaning of Shri Krishna's teachings in Bhagvad Gita, then one can become a better human being in the society. No qualms in believing that Shri Krishna is the best politician. "Do your duty and do not worry about the fruit of action" – this teaching is a guiding light in our life. Also, when Draupadi needed His help, He came to her rescue. The way He supported her when she was in trouble makes me adore Him."

- Mrs. Vidyatai Ajit Chavan
Courtsey : Daily 'Sakal' (Mumbai),
Shri Krishna Jayanti, Wednesday, Dated 24.8.16

in what He speaks. Those who abide by the teachings of Sai and follow His path, inculcate the right conduct, Sai Baba is always with them; this is apparent in the stories and miraculous experiences that we hear from Sai devotees. Mrs. Vidyatai Chavan has one such experience.

She inculcated the values like working for the society from Rashtriya Seva Dal, an organization formed to serve the Nation. In

order to be able to serve the people most, she joined active politics. For this venture, she sought Sai Baba's blessings from the Sai temple that belonged to Mangalatai Borkar in Vile Parle, Mumbai. Due to concrete work done in her ward, she got elected as a corporator - one who serves for the ward from which he/she is selected. At that time, in Malad, 69-70 thousand slum houses were being destroyed. The slum dwellers were now homeless and hence, very sad. Mrs. Vidyatai felt really bad about their miserable condition. Once while performing *pooja* at home, her inner voice said, 'help those in need, serving them is worshipping God.' Instantly, she started working for them. She worked diligently day and night for them and helped almost thirteen thousand people to get houses. As she helped them secure a home, she herself secured a place in their hearts.

Mrs. Vidyatai was mainly a commercial artist who had decided to serve the people. She owned a studio and was happily working. Nevertheless, the feeling that we need to pay back to our society became stronger and made her take up social work. In order to reconstruct the deteriorating social picture around her, she kept aside her interest as a commercial artist and devoted maximum time for social causes. Then she entered politics, and gradually, from being a corporator, she gradually progressed and became Member of Legislative Assembly. Her horizon of work widened. She could now work more for her people.

Despite this, she takes part in social, economic, religious and cultural events too with full zest. She firmly believes in Akkalkot's Shri Swami Samarth, Shegaon's Gajanan Maharaj and Shirdi's Sai Baba. She is a staunch devotee.

According to her, these spiritual figures ignored their own lives, stayed as mendicants, but illumined the path of others. They were a living example of mendicancy, sacrificing all materialistic joys. Yet, they led to progress many lives. It is a sin to talk disrespectfully about such personalities. She stated her protest against the recent gibberish criticism on Sai Baba, which hurt the social conscience.

Discussing more on the issue, Mrs. Vidyatai said, Maharashtra has a sacred legacy of saints like Dnyaneshwar, Eknath, Namdev, Tukaram, Ramdas, and so on. I have read and heard about these saints. As saint Tukaram says,

In them, you notice God's presence...

Those who compassionately serve the poor struck with pestilence They are the real sages, let this be known, who regard the poor and needy as their own.

Such is the service of the saints and thus, we shouldn't bear blasphemous things spoken against them.

Sai Baba's service to the poor, needy and the people who were sick is well known. He Himself stayed in tattered clothes, ate whatever He got from begging, stayed in a dilapidated *Masjid*, lived the life of a mendicant, but never did He work for His personal gain. He did not desire for money or good living. Devotees regard Him as their Lord, not just a saint. That is why, now they have adorned Him with offerings of gold and silver. This is their faith. Faith, devotion have no religion, do they? People belonging to different religions regard Him with respect and come to pay obeisance. 'We experience what we feel or think,' with the right intention in mind, one gets to experience the Divine. Having experienced this, devotees have immense faith in Him and turn to Him in times of despair. He manifests Himself as Shiva for Megha, Gholapswami for Dr. Pandit, as Vitthal for some, as Ram for others. He unified all religions by stating that The Master is one. His eleven promises have helped devotees overcome the ruckus caused due to criticism. Mrs. Vidyatai sees one soul in, Sai Baba, Gajanan Maharaj and Shri Swami Samarth. Following His teachings, she continues to serve the poor and needy. Her husband, Mr. Ajit, too, is a devotee of Sai Baba. Mrs. Vidyatai reads a hymn daily from Shri Bhagvad Gita, and recites the name of God. She has sought a balance of all three paths of life - Knowledge, Action and Devotion. She has left all her worries to God, Sai Baba. "I have handed my destiny to Him," this is her firm belief.

Narrated by **Mrs. Vidyatai Ajit Chavan**
Penned by **Mrs. Mayuri Mahesh Kadam**
Translated from Marathi by **Meenal Vinayak Dalvi**

"Those who visit my shrine, I shall free them from all their worries..."

Account of Shri Sai Baba devotees undertaking pilgrimage on foot...

Whether we know Sai or not, whether we believe in Him or not, whether we are atheists or not, we may be near or far, it is only His will that He makes each His follower and makes him/her realize the connection, and then, the person becomes a staunch devotee of Sai Baba. Many devotees have experienced this earlier. One such devotee is Mr. Laurence D'souza of Om Sai Sharan Shri Laurence Baba Seva Trust.

For the last 37 years, Mr. Laurence D'souza has been organizing a pilgrimage on foot from Kajupada, Kurla, Mumbai to Shirdi and many devotees have joined him since. He began the first pilgrimage on foot in 1980. The reason behind this is astonishing and one that restores faith firmly in Sai Baba. He was a Christian by faith, and worked as driller in Hasman company. Since the household was Christian, they spoke in English. As a youth, full of zest and willing to enjoy life's each moment, Mr. D'souza used to smoke expensive cigars. But one day, an incident occurred which changed his life totally...

The company in which he was working faced conflicts among labour unions and as a consequence, Mr. D'souza had been arrested. He had to spend some time in the lockup of Ghatkopar police station. In that lockup, at one corner, he noticed a photo of Shri Sai Baba sitting with one hand on His cheek and ear. Till that time, he did not know anything about Shri Sai Baba. Other inmates used to worship the photo in mornings and evenings by singing paeans and used to invite Mr. D'souza to join them too. But, Mr. D'souza thought, "I do not know this saint, nor do such rituals take place in the Christian faith," so he ignored the rituals.

Once, on returning from bath, he started smoking a cigar. At that time, there was an old man sitting near the photo of Sai Baba. Mr. D'souza noticed him. That old man called Mr. D'souza. Till then, he had finished smoking half of the cigarette. He thought that it would not be courteous to go near the person with alighted cigar in hand. Moreover, it was an expensive one. What if that person or any other inmate asks for it? Mr. Laurence D'souza also knew that many inmates had the habit of smoking. That is why, he stubbed out the cigar, left it there and went near the old person. The old person made him worship the photo. He did what was told;, yet, all his attention was on the left cigar. Somehow, he was worried and feared that other inmates may pick up the cigar. Once the *pooja* was performed, he immediately returned, took the cigar and continued smoking till the end. At that point, other inmate who regularly performed *pooja*, arrived. He wondered who had already performed the *pooja*. He asked Mr. D'souza about it, and he narrated about

the old man. The person asked Mr. D'souza, "Which old man? Which old inmate?" and made all inmates stand in front of him. Yet, the old inmate who had earlier told him to do the *pooja* was not seen. On inquiring how that old inmate looked, Mr. Laurence D'souza explained his appearance. All inmates were surprised that his description of that old inmate matched Sai Baba's appearance when he told them that the old inmate had beard and head gear like Sai Baba. The faithful inmates knew that the Sai Baba Himself had made an appearance as an old inmate. They exclaimed that despite their daily worship, they never got such an experience or miracle, but Sai Baba had Himself come here and that Mr. D'souza was lucky! "Bow to Him, ask whatever you want and see how He will surely fulfil your wish." At first, he did not believe this, but on others' insistence, he prayed that he should be freed soon. "If I am freed soon, I shall visit Shirdi on foot." In reality, he did not know where Shirdi was and how far it is from Mumbai. Nor did he believe that such a thing would happen. He thought Shirdi must be nearby. To everyone's surprise, within the next three days, Mr. D'souza walked out free of the

lockup.

Once freed, he returned home and carried on with his previous routine. He had forgotten to keep the promise made to Sai Baba. However, Sai Baba did not forget it. He kept reminding Mr. D'souza through several dreams and asked him, "When will you come to Shirdi?" Mr. D'souza could not fathom this, and he told his father about the dream. When his father asked him, "Did you say anything like that," he narrated the incident that had taken place in the lockup. In response, his father asked him to go to Shirdi. He had four different cars at that time. His father asked him to take Ambassador car. He insisted that he would go to Shirdi on foot, as promised. On hearing this, his father started laughing and then, he gave him an idea of the distance from Mumbai to Shirdi. Yet, staying firm on his decision, he asked his friends to come along with him. His friends were addicted to drugs and would often take opium, etc. They put the condition that only if he provided them with breakfast, meals and fulfilled their wish to intake drugs, they would come with him. Mr. D'souza agreed. Accordingly, a group of 7 people was ready to take a pilgrimage on foot. 14th January was the date decided to commence this journey. Someone told them that instead of merely going like that, it would be better to carry a photo-image of Sai Baba. Thus, Mr. D'souza got a photo framed and by carrying the photo around his neck, he started the journey on foot on 14th January, 1979 along with his 7 friends.

It is often said that "Only those people get to visit Shirdi whom Sai Baba calls. This is true to Mr. D'souza. Despite having no knowledge

about Shirdi's location, way to go and no direction, he took the journey. He took directions from people on the way. At that time, the roads too were not developed and no facilities were available. They did not have any convenient

spots, so they would ask people of one village about the people of the next village, reach the next village and by reference, would stay for a night. They would again start for Shirdi the next morning. In this manner, they reached Shirdi on the ninth day of their journey.

Till they reached Shirdi Sai Baba's temple, they were not aware of the fact that Sai Baba has taken *Samadhi*; that He was not physically present. They visited the temple shrine, and at that moment, a miracle had occurred. To everyone's surprise, Mr. D'souza's stammering had disappeared the moment he bowed to Sai Baba and touched His Lotus Feet. Prior to that, Mr. D'souza faced difficulty in uttering each word clearly. (At that time, it was possible to go near the Sai Baba's statue, touch the Feet and even put a garland around the neck of the Deity.) Indeed, Sai Baba had kept His promise too, one of the eleven promises,

"Those who visit my shrine, I shall free them from all their worries."

Mr. D'souza had experienced this literally, as he could now speak without any difficulty. He uttered in Baba's ear a wish that Sai Baba's name should be joined with his name, and this wish was fulfilled, as he was soon known as Laurence Baba. He also made a resolution that every year, he would carry out the pilgrimage on foot from Mumbai to Shirdi. That year, he studied the routes, and made a note of villages on the way.

On 11th January 1980, he again undertook a pilgrimage with 15 Sai devotees, and that was the first pilgrimage with Sai palanquin (*palkhi*). Now the number of pilgrims has reached 700-800! His intention to undertake these journeys was noble - to diverge the youngsters who turned to crime or were addicts from their bad habits and free them of their vices. For this, he too gave away his habit of smoking cigars. He used to convince his friends and acquaintances of the ill effects of smoking and other bad habits on their way to Shirdi.

He included friends who were addicted to drugs, because he was certain that with Sai Baba's grace, they would be free from all these addictions. Sai Baba too affirmed this faith and did not let it shatter. Mr. D'souza was indeed successful in this task with 80% result.

As a consequence, he got motivated further and decided to bring the people, who had strayed to a different path of crime, back on track. With valuable guidance and assistance from the then police commissioner of Mumbai, Mr. Shrikant Bapat, he gathered criminals under a roof and helped them start small-scale businesses. He included such people in his annual pilgrimage too.

Now, Mr. D'souza became totally engrossed in serving Sai Baba. Instead of focusing on increasing the number of pilgrims in the pilgrimage, he focused on how the pilgrims remain on the right track and how they receive better guidance throughout the journey and even after that. He started guiding the youth who joined from other places too, besides his established Laruence Baba Trust. By narrating how we can overcome our problems by instilling our faith in Sai Baba and by following the path showed by Him, he assured the devotees and emphasized how Sai Baba loved serving humanity and hence, we shall also do the same. He also convinced them to arrange more, similar kind of pilgrimages on foot.

In this manner, Mr. D'souza, who completely devoted himself in serving Sai Baba, experienced many incidents of His grace. Since 22 years, in the month of *Shravan* (usually July-August), he has been visiting Shirdi and along with the devotees here, he has been reading Shri Sai Sat Charita. 22 years ago, in his family, no one could speak Marathi properly; this being the case, reading and religious text was a major challenge. Once, such recitation of the text was organized at KEM in Mumbai. At that event, Mr. Shantaram Mirani, the great grandson of Sai devotee, Sri Kashiram Shimpi had come. He taught Mr. D'souza to read the Shri Sai Sat Charita in Marathi. From this event onwards, he could easily read and understand the text. Today, he can speak Marathi fluently. He knows the Sai Stavan Manjari (praise of Sai Baba) by heart. He believes, all this is a big miracle of Sai Baba.

Mr. D'souza believes and asserts that whatever he is today, it is Sai's grace. Due to His blessings, the pilgrimage on foot every year commences and gets completed without any obstacles and I get to serve other people too.

At present, the palanquin pilgrimage has a considerable number of women devotees too. Mr. D'souza believes that due to presence of women, there has been discipline and regulation in the pilgrimage, even while talking, walking, there is an order, and this comes naturally due to participation of women. Hence, he encourages more women to participate in this pilgrimage.

Mr. Laurence D'souza and his entire family has become staunch devotees of Sai Baba. It is noticeable that in this entire journey, they do not accept a single penny from any Sai devotee.

The head of this palanquin pilgrimage is Melvin D'souza (Dada), and vice-head Umesh Sarang, Balasaheb Maskare, Suresh Sapkal, Prakash Palsekar, Sandip Gharat, Maruti Ransubhe, Ashok Mane, Bajirao Pavse, Sanjay

(Contd. on page 32)

नीलोत्पलदलश्याम। भक्तकामकल्पद्रुम। वह यह भरताग्रज सीताभिराम। दाशरथी राम मुझे दिखाई दिया। किरीट कुंडल मंडित। वनमाला विराजित। पीतवास चतुर्हस्त। जानकीनाथ मुझे दिखाई दिया।। शंख-चक्र-गदाधर। श्रीवत्सलांछन कौस्तुभहार। वह है पुरुषोत्तम परात्पर। रूप मनोहर दिखाई दिया। कहते हैं मानव रूप धारी। असामान्य लीलावतारी। जानकी जीवन मनोहारी। धनुर्धारी मुझे दिखाई दिया। फ़क़ीर दिखता बाह्यकार। भीक्षा माँगे घर-घर। जानकी जीवन मनोहर। धनुर्धारी मुझे दिखाई दिया। हो कैसा भी औलिया ऊपर से। किसी को कैसा भी दिखे अंदर से। जानकी जीवन मनोहर। धनुर्धारी मुझे दिखाई दिया।।...

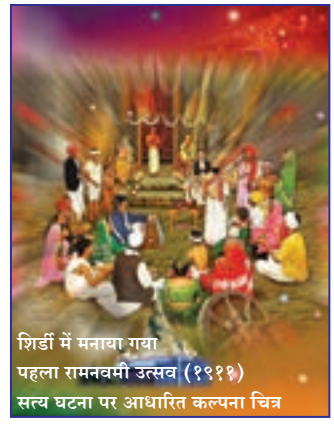

पालकी... लेकर चलते चलें...
मुख से ''साईं राम''... ''साईं राम''... कहते चलें।।...

संकलन-शब्दांकन : **साईं चरण रज** मराठी से हिंदी अनुवाद : **विनय घासवाला** सहायक : **राजीव दशपुत्रे**

साईं भक्तों का सबसे बड़ा उत्सव अर्थात् श्री रामनवमी उत्सव। आप सब जानते है कि शिर्डी में सन् १९११ में बाबा की प्रेरणा और अनुमति से पहला रामनवमी उत्सव मनाया गया। तबसे लेकर आज तक, अर्थात् बाबा को महासमाधि लेकर १०० वर्ष हो रहे हैं, रामनवमी उत्सव बड़े उत्साह से, उल्लास से, केवल शिर्डी में ही नहीं, बल्कि दुनिया में जहाँ-जहाँ साईं भक्त हैं, साईं मंदिर हैं, वहाँ-वहाँ मनाया जाता है। अगर देखा जाये, तो सम्पूर्ण वर्ष भर विविध राज्यों से, शहरों से, गाँवों से पालकी सहित पदयात्राएँ शिर्डी में आती हैं। रामनवमी उत्सव में शामिल होने के लिए आने वाले पदयात्रियों की संख्या बड़े पैमाने पर होती है।

पालकी सहित पदयात्रा में केवल पुरुष ही नहीं, बल्कि महिलाएँ भी शामिल होती हैं। युवा भी बड़ी संख्या में शामिल होते हैं। अभी के संगणकीय युग में भी युवाओं में जिस उत्साह से साईं भक्ति दिख रही है, वह केवल बाबा के चिरंतन चैतन्य तत्त्व का ही द्योतक है। **नित्य मैं जीवित, जानो यह सत्य। नित्य प्रतीति से, करना यह अनुभव।।** बाबा का यह आश्वासन आज भी सत्य प्रतीत होता दिखाई देता है। आदमी वृद्धावस्था में अध्यात्म की ओर बढ़ने लगता है, तभी ईश्वरचिंतन करने लगता है, नामस्मरण करने लगता है, यह समझ भूल भरी है, इसका अनुभव युवा साईं भक्त करा रहे हैं। वे भक्त केवल पदयात्रा कर शिर्डी जाते हैं, ऐसा नही। तो, पदयात्रा को वे आधुनिक मोड़ दे रहे हैं। अलग-अलग संकल्पनाओं से अलंकृत कर रहे हैं। सामाजिक जिम्मेदारी निभा रहे हैं,

भटवाडी साईं दर्शन सेवा संस्था (घाटकोपर, मुम्बई)

कुछ एक मक़सद सामने रख कर आगे बढ़ रहे हैं। उम्र से, अनुभव से बुज़ुर्ग साईं भक्तों का मार्गदर्शन और युवा साईं भक्तों की नई सोच इसका सुंदर संगम आजकल पालकी-पदयात्रा में दिखाई देता है।

इसका प्रातिनिधिक उदाहरण है घाटकोपर, मुम्बई की भटवाडी साईं दर्शन सेवा संस्था। यह संस्था १९९९ से इस कार्य में मग्न है। इस संस्था की ओर से रामनवमी के दौरान घाटकोपर से शिर्डी पालकी-पदयात्रा निकाली जाती है। इस संस्था ने कुछ सालों पूर्व पालकी-पदयात्रा समारोह के लिए एक पत्रक निकाला था। जिसमें साईं भक्तों को पदयात्रा द्वारा शिर्डी की वारी क्यूँ करनी चाहिए, इसके बारे में लिखा था। उसमें लिखा था कि पदयात्रा से शिर्डी की वारी करने से कुछ दिनों तक हम दूसरे कामों से अलग हो जाते हैं। एक अनोखे शाश्वत आनंद की प्राप्ति होती है। त्याग वृत्ति से ईश सेवा करने का समाधान मिलता है। व्यसनों से छुटकारा मिलता है। बुरी आदतों पर नियंत्रण रखने की शक्ति मिलती है। अंतर्मन में झर रही भक्ति का रूपांतर प्रत्यक्ष रूप में ला सकते हैं। वारी के दौरान एकता की भावना दृढ़ होती है। उसका अनुभव भी आता है। यह सब अनुभव करने के लिए पदयात्रा से शिर्डी की वारी करनी चाहिए। श्री साईं सत् चरितकार हेमाडपंत के कथनानुसार बाबा ने भक्तों की इच्छा पूर्ण करने का व्रत ले रखा है। आप श्रद्धा रखिए और सबूरी बनाये रखें, आपका प्रश्न हल हुआ ही समझो। आने वाले चंद दिनों में बाबा की महासमाधि को १०० वर्ष पूर्ण होने वाले हैं। आज भी देश-विदेश के अनेक भक्तों को बाबा हमारे साथ होने की प्रतीति मिल रही है।

हो जाऊँ मैं गतप्राण।
वचन मेरा मानो प्रमाण।।
मेरी अस्थियाँ तुर्बत में से।
देंगी आश्वासन तुमको।।

– श्री साईं सत् चरित, अ. २५, पंक्ति १०५

इस साईं वचन की अनुभूति प्राप्त करने के लिए जीवन में एक बार शिर्डी पदयात्रा अवश्य करनी चाहिए।

आजकल की दौड़-धूप भरी ज़िंदगी में साईं भक्ति ही धीरज बँधाने वाली है, ध्येय को सिद्ध कराने वाली है। इसलिए इसमें लीन होकर, एकरूप होकर हमें अपना जीवन सार्थक कर लेना चाहिए, जीवन का उद्धार कर लेना चाहिए, ऐसा इस मण्डल का निश्चल, पवित्र हेतु है। इस वैचारिकता से ही भटवाडी साईं दर्शन सेवा संस्था स्थापित हुई। श्री साईं बाबा के ऊपर श्रद्धा के कारण साईं के दर्शन को नियमित रूप से जाने वाले मित्रों का समूह तैयार हुआ। जब यह मित्र इकट्ठा होते तब, साईं की लीला, उसमें से मिला हुआ बोध-सीख की आपस में चर्चा करते। आगे चल कर साईं के गीत, भजन वगैरह गाने की शुरुआत हुई। किसी निश्चित जगह पर या तो किसी के बुलाने पर उसके निवासस्थान पर इकट्ठा होकर भजनोत्सव रंगने लगा। ऐसा करते-करते साईं भक्ति अधिकाधिक दृढ़ होती गई... और १९९९ में पदयात्रा करके शिर्डी जाना तय हुआ। रामनवमी के उत्सव के लिए भटवाडी, घाटकोपर (मुम्बई) से २५ लोगों का समूह साईं की तस्वीर साथ लिए पैदल चलने लगा। किसी भी प्रकार का पूर्वानुभव ना होने के कारण नियोजन का अभाव; फिर भी बाबा की कृपा से यह पहली पदयात्रा सुखदायक

सम्पन्न हुई। आगे पदयात्रियों की संख्या बढ़ कर २५ से १००, १५०... करते-करते आज यह संख्या ७५०-८०० हो गई है।

इस संस्था की पदयात्रा में शामिल होने वाले प्रत्येक साईं भक्त का बीमा निकाला जाता है। ऐसा बीमा निकालने वाला यह मुम्बई स्थित पहला पदयात्री मण्डल होने का दावा इस संस्था का है।

इस पदयात्रा के लिए रु. ७५०/- प्रवेश शुल्क लिया जाता है।

पिछले दो वर्ष से इस पदयात्रा में पदयात्री श्री गुरुनाथ सामंत व कलानिदेशक श्री अतुल कुले की संकल्पना से रथ का समावेश किया जाता है। पहले साल समाधि मंदिर का, दूसरे वर्ष गुरुस्थान का और तीसरी बार शीशमहल का दृश्य रथ पर साकार किया गया था।

शुरुआत में बाबा की तस्वीर साथ लेकर पदयात्रा की जाती थी। २००३ से पालकी का समावेश किया गया। इस पालकी में पुरुषों के साथ महिलाओं का भी समावेश होता है। जो महिलाएँ प्रसंगोपात समर्थ रूप से ख़ुद को सम्भाल सकें ऐसी लगभग १५ से २० महिलाओं का इस पदयात्रा में समावेश होता है। इन महिलाओं की सारी व्यवस्था सौ. सुप्रिया चव्हाण देखती है। इस पदयात्रा में श्री विलास और सौ. सोनल खण्डेसागर, तथा श्री कैलास और सौ. रंजना ढगे दाम्पत्य अनेक वर्षों से जुड़े हैं।

संस्था के अध्यक्ष श्री मोहन वामन, उपाध्यक्ष श्री जितेन्द्र हरमलकर, सचिव श्री अतुल सरमलकर, सहसचिव श्री मंगेश अपराज, कोषाध्यक्ष श्री मिलिंद शिर्के, सहकोषाध्यक्ष श्री प्रकाश बांदिवडेकर, कार्याध्यक्ष श्री राजेश चव्हाण, और ट्रस्टी श्री मनोहर उर्फ़ मामा पाटकर, श्री दीपक बाबा हाण्डे (नगरसेवक), श्री सचिन भाऊ सरमलकर, श्री विजय पांजरी, श्री विवेक मुले और श्री अशोक टावरे के प्रमुख मार्गदर्शन में घाटकोपर से शिर्डी पालकी सहित पदयात्रा का कार्यक्रम सफल रूप से पूर्ण किया जाता है। साईं की भक्ति और साईं की सीख इन दोनों का संगम पदयात्रा के दौरान दिखाई देता है।

बाबा ने जिस प्रकार रोगियों की सेवा की, ज़रूरतमंद लोगों की मदद की, तद्नुसार यह मण्डल भी कार्य करता है। पदयात्रा के साथ शिवसह्याद्री ट्रस्ट की आय.सी.यू. से युक्त ॲम्ब्यूलन्स भी रहती है। पदयात्रा के बाद यह मण्डल सम्पूर्ण वर्ष में रक्तदान, राजीव गांधी बीमा योजना, नेत्रचिकित्सा आदि शिविरों का आयोजन करता है। साथ-साथ मण्डल की ओर से महानगरपालिका अस्पताल में दाख़िल ज़रूरतमंद रोगियों को सहायता दी जाती है। समय-समय पर समाजोपयोगी कार्य भी संस्था की ओर से किया जाता है।

वर्ष के दौरान किये जाने वाले विविध सामाजिक कार्यक्रमों में मण्डल के सदस्य श्री ज्ञानेश्वर काटे, श्री चिंतामणी काम्बली, श्री अमृत कोचरेकर, श्री संतोष डाकी, श्री पप्या वालावलकर, श्री निलेश आवडे, श्री संकेत मोरे, श्री मयूर वाटाम्बले, श्री नितीन जगताप, श्री संतोष ठोसर, श्री विशाल जाधव इन साईं भक्तों का मौलिक योगदान होता है।

श्री साईं बाबा महासमाधि शताब्दी महोत्सव निमित्त रक्तदान शिविर आयोजित करने का मण्डल का मानस मण्डल के एक सम्पर्क सदस्य श्री प्रतीक जाधव ने व्यक्त किया।

पदयात्रा के दौरान पदयात्रियों कों साईं लीला का अनुभव अवश्य आता है। उसमें से एक... २००६ में पदयात्रा करने वाले श्री रवीन्द्र सावंत और श्री प्रकाश बांदिवडेकर को एक बड़े कंटेनर ने ठोक दिया, जिसमें श्री सावंत ज़बरदस्त रूप से घायल हुए, और श्री बांदिवडेकर के सर में चोट आई। तीन-चार दिन अस्पताल में उपचार लेकर श्री बांदिवडेकर पदयात्रा जब शिर्डी पहुँची तब उसमें शामिल हुए। श्री सावंत के ऊपर दो बड़ी शल्यक्रियाएँ करनी पड़ी। बाबा की कृपा से वे ठीक हो गये। आज भी वे शिर्डी की पदयात्रा करते हैं।

मण्डल के ट्रस्टी श्री दीपक बाबा हाण्डे (नगरसेवक) और अध्यक्ष श्री मोहन वामन पदयात्रा का आयोजन कुशलता से करते हैं। श्री दीपक हाण्डे १९९० में गुरुपूर्णिमा के दौरान अपने मित्रों के साथ पहली बार शिर्डी गये। प्रथम दर्शन में ही उनको बाबा से लगाव हो गया। सप्ताह में एक बार वे शिर्डी जाने लगे। शनिवार को सुबह वे अपने घर के पास स्थित इस्त्रीवाले के पास, घर वालों को पता न चले इसलिए, थैली में कपड़े भर कर रख आते थे। शाम को कुछ काम निकल आया है, कह कर घर से निकलते, इस्त्री वाले से कपड़ों की थैली लेते और सीधा बस पकड़

कर शिर्डी पहुँचते। सुबह की काकड आरती वगैरह कर के शाम को वापस घर आते। ऐसा करते-करते उनका साईं परिवार बढ़ता गया। परिचित साईं भक्तों के यहाँ साईं पारायण, भजन आदि विविध साईं कार्यक्रमों का आयोजन करने लगे। साईं भक्तों के दुख एवं संकट के समय में वे दौड़ कर पहुँच जाते। क्षमतानुसार मदद करने लगे। आज मैं जो कुछ भी हूँ वह साईं कृपा के कारण ही हूँ, अनेक संकटों में बाबा ने रक्षा की है, ऐसा कहते हुए उन्होंने अपना एक विलक्षण अनुभव बताया...

तारीख़ २ जून २०१५ के दिन वटसावित्री पूर्णिमा थी। अकोला ज़िला के बदगी में बेलापुर में एक कार्यक्रम था। उसके लिए मैं गाडी से निकला। मेरे सास-ससुर का गाँव भी उसी रास्ते पर होने के कारण मैंने उनको भी अपने साथ लिया। हम जब निकले तब मेरे कार्यालय में काम करने वाला संदेश भेके नामक युवक कार्यालय के बाहर खड़ा था। उसको भी मैंने साथ चलने को कहा। घर वालों को बिना बताये चलना ठीक न होने के कारण पहले उसने नकार दिया, पर मैंने उसको शाम को वापस आयेंगे, बताने पर वह तैयार हो गया। मैं वाहन चालक के बग़ल वाली सीट पर बैठा, और संदेश तथा मेरे सास-ससुर पीछे बैठे। दोपहर का २.३०-३ का समय था। गाड़ी जुन्नर छोड़ कर आगे खामुण्डी गाँव है वहाँ पहुँची। गाड़ी १०० कि.मी. प्रति घंटा गति से दौड़ रही थी। हमारे वहाँ के बसस्टॉप पर पहुँचते ही अचानक सामने से एक बड़ी काले रंग की गाड़ी आई और ज़बरदस्त दुर्घटना हुई। गाड़ी में चालक के लिए सेफ्टी बलून होने के कारण उसको कोई हानि ना पहुँची। मैं और संदेश बहुत ज़ख़्मी हुए। सास-ससुर को भी गम्भीर चोटें आईं। बेसुधी की अवस्था से बाहर आने पर मैंने देखा, तो मैं किसी ॲम्ब्यूलन्स में था, ऐसा प्रतीत हुआ। मैं चलने-फिरने की अवस्था में नहीं था। संदेश को तो प्राणवायु लगाया गया था। ऐसी अवस्था में हमें उस ॲम्ब्यूलन्स से पुणे के आदित्य बिरला अस्पताल में भर्ती किया गया। वहाँ के अतिदक्षता विभाग में मुझे रखा गया। मेरे साईं भक्त मित्रों को इस बात का पता चलते ही वे अस्पताल आये। उनसे मैं संदेश के बारे में पूछता रहा। वे मुझे ठीक होने की बात बताते थे। पर, उनका यह कहना मुझे सही नहीं लग रहा था। संदेश के साथ कुछ-ना-कुछ अतिशय गम्भीर हुआ है, ऐसा मुझे लग रहा था। उसके कारण मैं बहुत व्यथित था। असल में क्या हुआ है, यह जानने के लिए मेरा मन बेचैन था। मेरे साईं भक्त मित्रों से मैं बार-बार पूछताछ करने लगा। मेरे थोड़ा ठीक होने पर उन्होंने बताया कि संदेश गम्भीर रूप से घायल था और उस पर बड़ी शल्यक्रिया भी हुई है। शल्यक्रिया (ऑपरेशन) करने के लिए ६-७ घंटे लगे थे। यह सुन कर मैं हक्का-बक्का सा रह गया। मैं मन ही मन बाबा से प्रार्थना करने लगा... कहा, ''बाबा, मेरे कारण वह बिना घर बताये मेरे साथ आया। कृपा कर उसको बचा लीजिए।'' कारण भी वैसा ही था। मित्रों से मालूम हुआ था कि डॉक्टर्स ने भी अब सबकुछ भगवान् पर छोड़ने को कहा था। संदेश के ऊपर शल्यक्रिया करने से पूर्व अस्पताल के काग़ज़ों पर जिम्मेदारी के रूप में मित्रों ने ही हस्ताक्षर किये थे। कुछ समय बाद संदेश को भी मेरे ही अतिदक्षता विभाग में लाया गया। मेरे सामने के ही बिस्तर पर उसे रखा गया। उसकी वह अवस्था देख कर मुझे बहुत बड़ा दुख हुआ। उसी क्षण मैंने मेरे मित्रों से कहा, ''पहले बाबा के सामने श्रीफल रखिये।'' ऐसा कह कर मैं अंतःकरण पूर्वक प्रार्थना करके बाबा को संदेश को बचाने की याचना करने लगा। मैं बारंबार बाबा से प्रार्थना कर रहा था। दो दिनों के बाद संदेश की हालत में सुधार होने की बात डॉक्टर्स के बताने पर मेरी आँखें भर आईं; और मेरे हाथ उस साईं नियंता के सामने जुड़ गये।

माथे पर १ इंच का खड्ढा होने के सिवा संदेश अभी काफ़ी स्वस्थ है। साईं की सेवा कर रहा है। इस दुर्घटना में साईं भक्तों की केवल भक्ति ही नहीं, बल्कि साईं की सीख को आचरण में लाने की बात दिखाई दी। हम जब अस्पताल में थे तब केवल घाटकोपर से ही नहीं, परंतु मुम्बई के विविध साईं पदयात्री मण्डल के सदस्य हमें देखने और मदद करने वहाँ पहुँचे थे। यह बाबा की ही कृपा है, जिसके कारण इतना बड़ा साईं परिवार मुझे मिला।

श्री साईं की कृपा और आशीर्वाद का लाभ सभी को मिले, उनकी सीख सभी को ज्ञात हो, वैसा आचरण हो, इसके लिए हम भरसक प्रयास कर रहे हैं।

आजकल की दौड़-धूप वाली ज़िंदगी में वज़नदार चीज़ें साथ में लेकर चलना असम्भव होता है। इसलिए लगभग ७५० पन्नों का श्री साईं सत् चरित ग्रन्थ, उसमें दिये गए कुछ अंश पढने की इच्छा होते हुए भी साईं भक्त अपने साथ नहीं रख सकते। इस पर उपाय के तौर

पर एक–एक स्वतंत्र अध्याय पॉकेट बुक के आकार में पुस्तिका के रूप में प्रकाशित करने का काम चल रहा है। इसके कारण अपनी सुविधा और समय के अनुसार कभी भी यह सद्ग्रन्थ साईं भक्त पढ़ सकेंगे। यह कार्य जल्द ही पूर्ण करके एक–एक स्वतंत्र अध्याय ऐसा ५३ अध्यायों का बॉक्स चंद ही दिनों में इच्छुक साईं भक्तों के लिए उपलब्ध कराया जायेगा। ''जो–जो बाबा की भक्ति में लगा, उसका बेड़ा पार हुआ।'' इसके अनुसार हमसे जो कुछ भी होगा वह सब हम मिलकर कर रहे हैं।

❍❍❍

Gurusthan

Dwarkamai

Chavdi

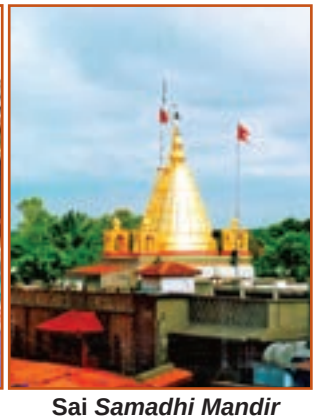

Sai *Samadhi Mandir*

Humble Appeal to the Philanthropic Sai Devotees

The Centenary Festivities of Shri Sai Baba's *Samadhi* will be celebrated from October 1, 2017 to October 18, 2018 on a large scale by the Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi. The front sides of the *Samadhi Mandir*, the Dwarkamai, the *Chavdi* and the *Gurusthan* are proposed to be decorated with fragrant flowers of different varieties on every Thursday that falls during this length of period (total 56 Thursdays).

The cost of floral decor & arrangements is estimated approximately Rs. 60,000/- (sixty thousand) per Thursday. The Sai devotees, who are willing to give donation for this noble cause, may credit the amount in the State Bank of India, having the Sansthan's Account No. 35420673060, and enroll their names on the following e-mail addresses : garden@sai.org.in or saibaba@sai.org.in

- Executive Officer,
Shree Saibaba Sansthan Trust,
Shirdi

साईं अनुभव

साईं कृपा से जीवन हुआ कृतार्थ...

मेरे पिताजी कै. श्री गंगाधर तुकाराम जगधनी (गुरुजी) का जन्म ११ अक्तूबर १९१८ को राहुरी, ज़िला अहमदनगर, महाराष्ट्र में हुआ। उल्लेखनीय बात यह है कि इनके जन्म के पाँचवें दिन ही अर्थात् १५ अक्तूबर १९१८ के दिन साईं बाबा ने महासमाधि ली।

सन् १९४० में अपनी युवावस्था में पिताजी की प्राथमिक शिक्षक के तौर पर शिर्डी में नियुक्ति हुई। यह साईं की ही लीला थी। वे अपने भक्त को भक्ति की डोर से बाँध कर अपने चरणों तक ले आये। शुरू में बाबा की ओर एकाग्र होकर देखते रहने वाले मेरे पिताजी साईं की भक्ति में कब लीन हो गये यह उनको भी पता नहीं चला।

एक दिन शाला की सभा के गम्भीर वातावरण में उनका ध्यान घुटने मोड़ बैठे हुए साईं बाबा की तस्वीर की तरफ़ गया और विस्मित होकर वे चौंक पड़े। उनको ऐसा लगा कि बहुत दिनों के बाद किसी क़रीबी व्यक्ति से मिलना हो रहा है। बेचैन मन में विचारों का मेला लगा। खैर! सभा समाप्त हुई और उनको बचपन में आये एक स्वप्न की स्मृति हो आई। वे पशुओं को चराने ले गये थे, तब किसी ने उनको पास बुला कर, अपनी गोद में बिठा कर उनके हाथ में दो पैसे रखे थे। वह व्यक्ति कोई और नहीं, बल्कि साईं स्वयं ही थे। बस्, इसी एक स्वप्न ने उनके जीवन में बदलाव लाया। यही से शुरू हुआ अपनेपन का अटूट नाता। यह नाता उनके जीवन का एक हिस्सा बन गया।

अब्दुलचाचा, छोटेबाबा, अमीर शक्कर आदि बाबा का प्रत्यक्ष सान्निध्य प्राप्त किये हुए भक्तों का नित्य संग, साथ-साथ साईं प्रेम की आर्द्रता और सद्गुरु के प्रति खिंचाव, इन सब बातों का आपस में ऐसा मेल हुआ कि पिताजी का जीवन साईं लीलाओं से प्रकाशमान हो गया।

पिताजी केवल साईं करुणा के बल पर जीवन की अल्पताओं के बीच भी मन की अमीरी के साथ जीते रहे।

सुबह काकड आरती, रात को शेजारती, साथ-साथ सुबह-शाम श्री साईं सत् चरित का पठन वे करते रहे और यही संस्कार हम दस भाईयों की रग रग में लहू बन कर बह रहा है। देखते ही देखते बाबा की भक्ति में लीन पिताजी के जीवन का उत्तरार्ध शुरू हुआ।

सन् १९७५ के दौरान वे सेवानिवृत्त हुए और उनके साईं भजनों के फूलों पर बहार आने लगी। उन्होंने १०० साईं भजनों के फूलों की माला तैयार की। ये सभी भजन बाबा द्वारा दी गई आध्यात्मिक शिक्षा का ख़ज़ाना है। साईं भजनों में रंगे पिताजी को साईं भजन बिना भोजन निःस्वाद लगता था। वे पूर्णरूपेन साईं में लीन हो गये थे।

बाबा के दिन गुरुवार ५.११.१९९२ को सुबह पाँच बजे साईं भजन गाते-गाते साईं चरणों में वे समा गये।

उसी साल, रामनवमी से उनकी स्मृति में 'साईं प्रभा मण्डल राहुरी' की स्थापना करके राहुरी से शिर्डी साईं पालकी का शुभारम्भ किया गया, जो आज तक निरंतर जारी है।

– डॉ. सुभाष गं. जगधनी
द्वारा साईं क्लिनिक, मल्हार बाड़ी मार्ग,
मु. पो. ता. राहुरी, जि. अहमदनगर, महाराष्ट्र राज्य.
ई-मेल : drjagadhni@gmail.com
संचार ध्वनि : (०)९८२२२६२१७३

साईं भक्ति अधिक दृढ़ हुई...

मैं एक सेवानिवृत्त माध्यमिक शिक्षक बाबा की सेवाभक्ति करता रहता हूँ।

महाराष्ट्र के सातारा ज़िले के फलटण में हम कुछ शिक्षक १९७६ से हर साल दिवाली की छुट्टियों में साईं दर्शन के लिए शिर्डी जाते हैं। कुछ दिन वहाँ रहते हैं। सभी देवी-देवताओं के दर्शन करते हैं। सभी आरतियों में शामिल होते हैं। महाप्रसाद ग्रहण कर वापस फलटण आ जाते हैं। शुरुआती दौर में हम सब कुल मिला कर १५-२० शिक्षक शिर्डी जाते थे; अब यह संख्या ३०-४० तक पहुँच गई है।

पहले १९७६ से १९८० के दौरान बाबा के अभिषेक के लिए सिर्फ़ २५ पैसे लगते थे। सुबह तीन-चार बजे अभिषेक करने हेतु क़तार में खड़ा रहना पड़ता था। उसके लिए रात को दो बजे उठ कर स्नानादि विधि निपटाकर तैयार रहना पड़ता था। जल्दी जाने के कारण बाबा को अपने हाथों हार पहनाना, नारियल, पेड़ा आदि अर्पण करने का सौभाग्य प्राप्त होता था। कभी-कभी तो बाबा को स्नान कराने का अवसर भी मिलता था।

मेरी शादी १९७८ में हुई। कई दिन बीत चुके, लेकिन संतान-सुख नसीब नहीं हो रहा था। उसके लिए श्री साईं सत् चरित ग्रन्थ का पारायण और बाबा से नित्य प्रार्थना करता रहा।

१९८५ के नवम्बर में हम सब हमेशा की तरह शिर्डी गये। हार, नारियल, पेड़ा आदि लेकर अभिषेक की क़तार में खड़े हुए। क्रमशः दर्शन के लिए आगे बढ़ना था। मेरी बारी आई। बाबा की मूर्ति को हार पहना कर नारियल, पेड़ा अर्पण किया। पीछे मुड़ कर थाली लेने गया, तो थाली में पूजन किया हुआ नारियल दिखाई दिया। मेरे पीछे श्री एम. पी. कुम्भार सर खड़े थे। मैंने उनसे पूछा, 'यह नारियल किसका है?' कारण यही था कि सभी के हाथों में अपना-अपना नारियल था। श्री कुम्भार सर ने कहा, 'यह नारियल बाबा ने ही आपको दिया है। प्रसाद के रूप में मिले इस नारियल से अब आपकी मनोकामना पूर्ण होगी।'...

सचमुच, चंद दिनों में ही हमारे घर में संतान प्राप्ति के लक्षण दिखाई देने लगे। बाबा के दिन, गुरुवार, दिनांक ८.१.१९८७ को सुबह ४.३० बजे हमें पुत्रप्राप्ति हुई। बाबा के प्रसाद के रूप में मिले पुत्र का नाम भी हमने साईं प्रसाद रखा। इस तरह जीवन में ख़ुशियाँ लाने वाली बाबा की भक्ति हमारे मन में अधिकाधिक बलवती होती गई।

फलटण के हमारे शिक्षकगण ने सातारा के श्री पां. शं. भुजबल तथा साईरंग महाराज के मार्गदर्शन में 'श्री साईं सेवा मण्डल फलटण' नाम से न्यास स्थापित करके साईं मंदिर बनाने का संकल्प किया। मण्डल के अध्यक्ष श्री मधुकर पांडुरंग कुम्भार एक विख्यात हाईस्कूल के प्राचार्य और साईरंग महाराज के एकनिष्ठ अनुयायी थे।

मंदिर के लिए लोगों से दान लेने की शुरुआत हुई। बाबा की असीम कृपा से लोगों का ख़ासा सहयोग मिला। फलटण के एक मित्रमण्डल ने हमें मंदिर बनाने हेतु एक एकड़ ज़मीन दान में दी। बाबा के आशीष, साईरंग महाराज का मार्गदर्शन, मण्डल के सभी नौ सदस्य और कई शुभचिंतकों के अथक प्रयास से साईं मंदिर का कार्य पूर्ण हुआ। मंदिर में स्थापित बाबा की संगमरमर से बनी पाँच फुट ऊँचाई की मूर्ति जयपुर (राजस्थान) से लायी गई। शिरडी साईं मंदिर की ही तरह इस मंदिर में नित्य पूजा, आरती एवं नैवेद्य अर्पण किया जाता है। साल भर शिर्डी में मनाये जाने वाले सभी पर्व-त्योहार पूरी शिद्दत के साथ यहाँ मनाये जाते हैं।

मूर्ति की स्थापना गुरुपूर्णिमा के दिन हुई थी, इस लिए प्रतिवर्ष स्थापना दिन एवं गुरुपूर्णिमा सम्मिलित रूप में मनाये जाते हैं। अब तक मंदिर निर्माण में ६०-७० लाख की धनराशि ख़र्च की गई है। बाबा के भंडारे एवं अन्य कार्यक्रमों के लिए एक बड़ा हॉल बनाया गया है। प्रत्येक गुरुवार को वहाँ ३००-४०० लोगों में बाबा के महाप्रसाद का निःशुल्क वितरण किया जाता है। प्रतिवर्ष पाठशालाओं में निःशुल्क नोटबुक और अन्य शैक्षणिक चीज़े दी जाती हैं। वृद्धाश्रम के लिए भी ज़रूरी चीजें दी जाती हैं। आरोग्य विषयक मुफ़्त शिविरों का भी आयोजन किया जाता है। इसके अलावा और भी कई सामाजिक कार्यक्रम इस मंदिर के परिसर में चलाये जा रहे हैं।

शिर्डी संस्थान के पूर्व अध्यक्ष श्री ससाणे और सदस्य श्री खाम्बेकर यहाँ आ चुके हैं। और भी कई विख्यात महानुभव यहाँ आ चुके हैं।

कुछ समय पहले, मार्च २०११ में मैंने एक संकल्प किया, प्रति मास के दूसरे सोमवार को शिर्डी की यात्रा करना। फलटण से शिर्डी गाड़ी से प्रवास करने लगा। दोपहर १२ बजे आरती के लिए दर्शन क़तार में लग जाता हूँ। लगभग दोपहर के २ बजे तक मंदिर परिसर में स्थित सभी देवी-देवताओं के दर्शन कर, महाप्रसाद एवं उदी

लेकर रात्रि १०–११ बजे वापस फलटण आ जाता हूँ।

इसी दौरान एक और संकल्प किया। संस्थान द्वारा प्रकाशित द्विमासिक पत्रिका 'साईं लीला' अपने सभी परिचित लागों को पढ़ने को मिले, इस हेतु मैं जन्मदिन, शादी–ब्याह एवं अन्य अवसरों पर उनको संस्थान के कार्यालय में स्वयं उचित धनराशि जमा करके सदस्य बनाता हूँ। परिणाम यह हुआ कि जो 'साईं लीला' पढ़ने लगे वे सभी साईं की ओर आकर्षित होने लगे। इससे मुझे जो सुकून मिलता है उसका वर्णन करना मुश्किल है।

– एस्. आर. लोहार
फ्लैट नं. १, 'अक्षत विहार'
लक्ष्मी नगर, विद्या नगर के पास,
मु. पो. ता. फलटण – ४१५ ५२३,
ज़ि. सातारा. महाराष्ट्र राज्य.
संचार ध्वनि : (०)९८९०२९५०७०

❍❍❍

Shri Sai Baba left His mortal coil and took the *Mahasamadhi* on Tuesday, October 15, 1918, the auspicious day of Vijayadashmi. Since then, Shri Sai Baba's *Punyatithi* is being celebrated on the day of Vijayadashmi every year by the Sansthan. This annual commemoration ceremony of *Punyatithi* is completing its one hundred years on 18th October 2018, the auspicious day of Vijayadashmi (Dassehra). To commemorate these 100 years, the Sansthan is going to celebrate this Centenary Festive on a grand scale from October 1, 2017 to October 18, 2018. A separate account has been opened in the name of 'Shri Saibaba Mahasamadhi Shatabdi Sohala', bearing number 35420673060 in the Shirdi branch of State Bank of India for Sai devotees, wishing to donate for the 'Centenary Year Event of Shri Sai Baba's *Mahasamadhi*'.

- Executive Officer,
Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi

साईं के लिए गुलदस्ता!

बड़ी महिमा वाले हैं शिरडी के बाबा... (२)
चरणों में जिनके चित्त मेरा लागा
(साईं जी हमारे, हैं कितने प्यारे)... (२)
सभी भक्तों के, हैं वे सहारे
बड़ी ममता वाले हैं शिरडी के बाबा... (२)
चरणों में जिनके चित्त मेरा लागा
(दुखी भक्त साईं को, जब जब पुकारे)... (२)
चले आते हैं साईं, बन के सहारे
बड़ी महत्ता वाले हैं शिरडी के बाबा
चरणों में जिनके चित्त मेरा लागा
(करो मन से भक्ति, साईं जी की सेवा)... (२)
श्रद्धा-सबूरी से, पा लोगे मेवा
बड़ी क्षमता वाले हैं शिरडी के बाबा... (२)
चरणों में जिनके चित्त मेरा लागा
(नहीं ऊँचा - नीचा, किसी को भी जानो)... (२)
सब हैं बराबर, यही सच जानो
बड़ी समता वाले हैं शिरडी के बाबा... (२)
चरणों में जिनके चित्त मेरा लागा

***

भोली भाली भावनाएँ, भर दो मुझमें साईं
भला सुनूँ, भला ही देखूँ, बात भली कहजाई
भोली भाली भावनाएँ, भर दो मुझमें साईं
(अवगुन से दूर रहें, श्रद्धा-भक्ति में बहें)... (२)
भोली भाली भावनाएँ, भर दो मुझमें साईं
भला सुनूँ, भला ही देखूँ, बात भली कहजाई
भोली भाली भावनाएँ, भर दो मुझमें साईं
(महिमा तेरी है अद्भुत,
देती भक्तों को सब कुछ)... (२)
भोली भाली भावनाएँ, भर दो मुझमें साईं
भला सुनूँ, भला ही देखूँ, बात भली कहजाई
(जब तक जग में जीवन है,
साईं नाम रस पीना है)... (२)
भोली भाली भावनाएँ, भर दो मुझमें साईं
भला सुनूँ, भला ही देखूँ, बात भली कहजाई
भोली भाली भावनाएँ, भर दो मुझमें साईं
भला सुनूँ, भला ही देखूँ, बात भली कहजाई
(सब कुछ भूलते जाना है,
बस् साईं में रम जाना है)... (२)
भोली भाली भावनाएँ, भर दो मुझमें साईं
भला सुनूँ, भला ही देखूँ, बात भली कहजाई
(नैनों में साईं को भर लूँ,
साईं कृपा हासिल कर लूँ)... (२)
भोली भाली भावनाएँ, भर दो मुझमें साईं
भला सुनूँ, भला ही देखूँ, बात भली कहजाई

***

हाथ जोड़ कर नमन करूँ
मैं शिरडी वाले साईं को
श्रद्धा पूर्वक श्रवण करूँ
उनकी बतायी बातों को
जय मेरे साईं, जय जय साईं
जय मेरे साईं, जय जय साईं
सच्चे मन से मनन करूँ
मैं शिरडी वाले साईं को
भक्ति के संग स्मरण करूँ
उनकी रची लीलाओं को
जय मेरे साईं, जय जय साईं
जय मेरे साईं, जय जय साईं
परम भाव से अध्ययन करूँ
मैं शिरडी वाले साईं को
श्रद्धा-सबूरी को अपनाऊँ
मन में रखूँ शिक्षाओं को
जय मेरे साईं, जय जय साईं
जय मेरे साईं, जय जय साईं

***

समाधि मंदिर में बैठे हो भक्तों को निहारते
शिरडी के साईं के भक्त, खिंचे चले आते
आये हैं कहाँ - कहाँ से
श्रद्धा-सुमन चढ़ाने
मन में है सबूरी भरी
कोई जाने या न जाने
समाधि मंदिर में लेटे हो,
भक्तों को निहारते
शिरडी के साईं बाबा के भक्त,
दौड़े चले आते

कितनी अटूट आस्था है
अपने साईं बाबा पर
पूरी होगी मनोकामना
समाधि-दर्शन पा कर
समाधि मंदिर में छाये हो,
भक्तों को सम्भालते
शिरडी के साईं के भक्त,
लहरों में हैं आते
अपने मन की बातें भक्त
साईं बाबा को बताते
बाबा की समाधि से वे
मन की शांति ले जाते
समाधि मंदिर में तुम हो,
भक्तों को सँवारते
शिरडी के साईं के भक्त,
जै जैकारा लगाते

***

साईं का भंडारा
कहते हैं साईं बाबा,
भेद-भाव करना नहीं
जग के प्राणी एक हैं
प्रभु की वह संतान सभी
मिल-जुल के सभी रहें
कभी किसी को दुख न दें
इक-दूजे से प्रीति करें
अपने जैसा ही समझें
शिरडी में साईं-भंडारा
बात यही है समझाता
लम्बी-लम्बी क़तारों में
साईं भक्त लग जाता
जाति-पाँति है यहाँ नहीं
साईं के प्यारे हैं सभी
ऊँचा-नीचा भी कोई नहीं
मानव-मात्र हैं ये सभी
पा करके प्रसाद यहाँ
भक्तों का मन भर जाता
लगता साईं का जैकारा
मन मगन मुसकाता
कहते हैं साईं भक्तों से
दिलों को बँटने न दो कभी
हम सब तो एक हैं
दंगा हो न कहीं कभी

***

अपने साईं की मैं तो, बनी रे नचनिया
मुझको घुमाये चाहे सारी दुनिया
मैं तो बनी रे नचनिया
अपने साईं की मैं तो, बनी रे नचनिया
प्यार में साईं की, मैं हो गई पागल
उनकी दया का मिला जो गंगाजल
करके आचमन, मैं भयी रे बावरिया
अपने साईं की मैं तो, बनी रे नचनिया
मुझको घुमाये चाहे सारी दुनिया
मैं तो बनी रे नचनिया
अपने साईं की मैं तो, बनी रे नचनिया
श्रद्धा-सबूरी से, मुझको वे मिले हैं
बोल नहीं फूटत, होंठ जो सिले हैं
प्रेम मगन हो कर, नाचूँ मैं सजनिया
अपने साईं की मैं तो बनी रे नचनिया
मुझको घुमाये चाहे सारी दुनिया
मैं तो बनी रे नचनिया
अपने साईं की मैं तो, बनी रे नचनिया
क्या करूँ अर्पण, मुझको नहीं पता
माथे पर लागा, विभूति का टीका
खो कर सुध-बुध, करूँ मैं कीर्तनिया
अपने साईं की मैं तो, बनी रे नचनिया
मुझको घुमाये चाहे सारी दुनिया
मैं तो बनी रे नचनिया
अपने साईं की मैं तो, बनी रे नचनिया
श्रद्धा-भक्ति से, मन मेरा भरा है
साईं बाबा की मुझ पर पूरी कृपा है
पा कर चरण-रज, झूमूँ मैं रैमुनिया
अपने साईं की मैं तो, बनी रे नचनिया
मुझको घुमाये चाहे सारी दुनिया
मैं तो बनी रे नचनिया
अपने साईं की मैं तो, बनी रे नचनिया

– विजय कुमार श्रीवास्तव
'साईं तेरी महिमा', २/४५६,
विवेक खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ - २२६ ०१०, उ. प्र.
ई-मेल : vijshirdi@gmail.com
संचार ध्वनि : (०)९९१९०३०३६६

दास कबीरा भर–भर पिया, और पीवन की आश

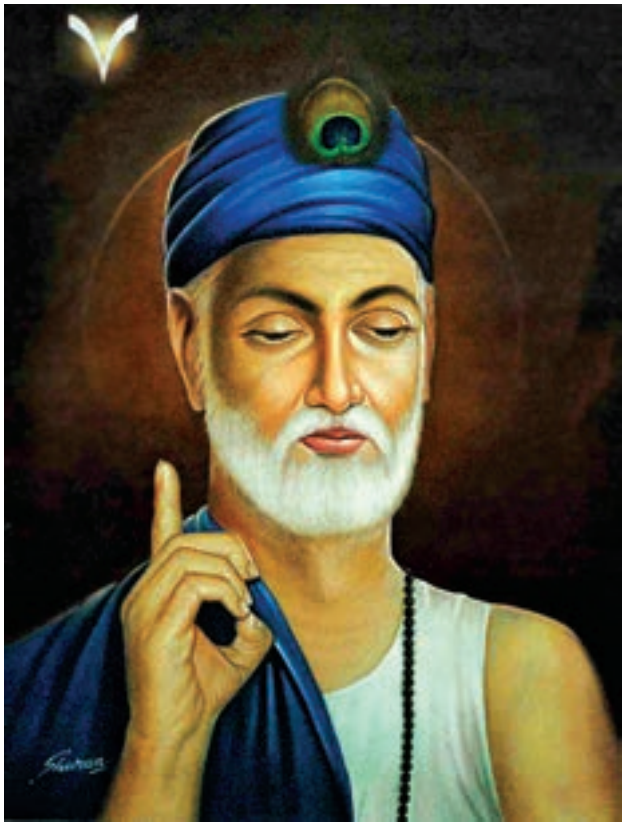

इस पृथ्वी लोक पर भगवान् व संत के दर्शन रस का भी कितना अनोखा आस्वाद होता है! ज्यों–ज्यों इस रस का आस्वादन करो, तृप्ति होती ही नहीं, प्यास बढ़ती ही जाती है। संत कबीरदास जी कह रहे हैं, मैंने इस रस को छक कर पिया; फिर भी और–और पीने की तृषा बनी ही रहती है।

भागवतकार भी कहता है –

''स्वर्गे सत्ये च कैलासे वैकुण्ठे नास्त्ययं रसः।
अतः पिबन्तु सद्भाग्या मा मा मुञ्चत कर्हिचित्।।''

– यह रस स्वर्ग लोक, सत्य लोक, कैलास और वैकुण्ठ में भी नहीं है। इसलिए हे भाग्यवानों! तुम इसका खूब पान करो; इसे कभी मत छोड़ो, मत छोड़ो।

हमें पाँच ज्ञानेंद्रियाँ मिली हैं – जिनके भिन्न–भिन्न विषय हैं। जैसे, चक्षु का रूप, नासिका का गन्ध, श्रोत्र का श्रवण, रसना का स्वाद और त्वक् का स्पर्श। जब हम जड़–चेतन रूपी किसी पदार्थ के सम्पर्क में आते हैं तब हमें हमारी अमुक ज्ञानेंद्रिय से उस पदार्थ के किसी एक विशिष्ट गुण का ही बोध हो पाता है, अन्य का नहीं; जैसे, रूप में रूप सम्बन्धी ही सुख प्राप्त होता है। वह पदार्थ हमें युगपत् सभी ज्ञानेंद्रियों के विषयों का रसास्वादन नहीं करा सकता। परन्तु, जब हम भगवान् की मूर्ति अथवा संत के दर्शन श्रद्धा, विश्वास, निष्ठा से करते हैं, तो हमारी सभी ज्ञानेंद्रियों को उनके विषयों का युगपत् रसास्वादन होने लगता है और हम छक कर पीने लगते है – हमें अतींद्रिय आनंद का अलौकिक अनुभव होता है। भगवान् और गुरु के स्वरूप में तो समस्त सुख एक साथ रहते हैं।

महाकवि माघ ने भी अपने 'शिशुपाल वध' महाकाव्य में लिखा है –

''हरत्यघं संप्रति हेतुरेष्यतः
शुभस्य पूर्वाचरितैः कृतं शुभैः।
शरीरभाजां भवदीयदर्शनं व्यनक्ति
कालत्रितयेऽपि योग्यताम्।।'' – १–२६

– नारद जी का दर्शन करते समय श्री कृष्ण द्वारा कहे गये इन शब्दों का अर्थ है – ''आपका दर्शन त्रिकाल में शरीरधारियों की योग्यता को प्रकट करता है; क्योंकि वर्तमान काल में पाप को नष्ट करता है, भविष्यकाल में आने वाले शुभ का कारण है तथा भूतकाल में पहले किये गये पुण्यों का परिणाम है।''

इस प्रकार भगवान् तथा संत के दर्शन तीनों काल में त्रिविध ताप को शांत करके आनंद की अनुभूति कराते हैं। दर्शन करने मात्र से पंच महापाप जल कर नष्ट हो जाते हैं।

''गुरोस्तु मौनं व्याख्यानं शिष्यास्ते छिन्नसंशयाः''

– गुरु का मौन भी शिष्यों के संशय को मिटा देने वाला होता है। हमारे शास्त्रों में, पुराणों में इस बात के दृष्टान्त भरे पड़े हैं। अभी, लौकिक व्यवहार में भी इस बात के प्रमाण देखने को मिल जाते हैं – पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपनी जीवनी में लिखा है कि वे कई बार अपने संशय – मतभेद लेकर महात्मा गांधी के सम्मुख उपस्थित होते, पर यह क्या, उनके सामने उपस्थित होते ही उनके बिना बोले ही उनके सारे संशय छिन्न–भिन्न हो जाते।

वर्षों पूर्व एक बार मेरे साथ भी कुछ ऐसा ही घटित हुआ – मैं सपरिवार बदरी धाम की यात्रा पर गया हुआ था। वहाँ मेरे पंडा जी (पंडित जी) ने मेरे सिद्ध संत–महात्मा के बारे में पूछने पर बताया कि यहाँ एक परम भागवत वैष्णव सिद्ध महात्मा एक कुटिया में रह कर तपस्या करते हैं। मैंने उत्कण्ठावश उनके दर्शन तथा अपने शंका–समाधान के लिए उनसे समय चाहा। मेरा अहोभाग्य, उन्होंने कृपा पूर्वक मुझे समय प्रदान कर दिया।

मैं निर्धारित समय पर उनके सम्मुख उपस्थित हुआ; परन्तु दोनों ओर से ही मौन की स्थिति बनी रही। मुझे ऐसा लगने लगा कि मेरे द्वारा बिना कुछ जिज्ञासा किये ही उन्होंने मेरी सब शंकाओं का समाधान कर दिया है और मुझे अपने सब प्रश्नों के उत्तर मिल गये हैं – **''गुरोस्तु मौनं व्याख्यानं शिष्यास्ते छिन्नसंशयाः''** वाली उक्ति चरितार्थ हुई। अस्तु, **''परिचरितव्याः सन्तः यद्यपि किमपि न कथयन्ति वाक्यानि''**, अर्थात् संत उपदेश का एक भी वाक्य न बोलते हों, फिर भी उनकी सेवा–परिचर्या करते रहना चाहिए; क्योंकि गुरु और भगवान् के दर्शन भी अमोघ एवं सर्वार्थ सिद्धि कराने वाले होते हैं – **''साधूनाम् दर्शनं पुण्यम्।''** इसीलिए हम सौ कष्ट सहन करके भी दौड़–दौड़ कर सुदूर तीर्थस्थलों को और अपने गुरुस्थानों को उनके दर्शन करने जाते हैं।

यदि श्री भगवान् के, श्री गुरु के, उनका माहात्म्य, उनकी महिमा, उनका गौरव समझ कर अत्यन्त ही भाव पूर्वक, प्रेम पूर्वक दर्शन किये जायें, तो सद्य आनंद की प्राप्ति होती है। दर्शन का मनन तथा निदिध्यासन – बारम्बार स्मरण और ध्यान में लाने से उनकी मूर्ति हमारे हृदय पटल पर अंकित हो जाती है। यही अलौकिक दर्शन है।

श्रीमद् भागवत में गोपियों के भगवान् श्री कृष्ण के प्रति विलक्षण प्रेम का वर्णन है। वे उनका अपलक दर्शन करती रहती थीं और उनको श्री कृष्ण का क्षणिक वियोग भी असह्य था। श्री कृष्ण के मथुरा चले जाने के कुछ समय पश्चात् श्री कृष्ण ने गोपियों को सान्त्वना देने और समझाने–बुझाने के लिए श्री उद्धव जी को गोकुल भेजा। वे गोपियों को सांख्य दर्शन का उपदेश देने लगे; पर गोपियाँ कहाँ मानने वाली थीं! उन्होंने कहा –

''उधो! मन नहीं भये दस–बीस।
एक हुतो सो गयो स्याम संग,
अब को आराधे ईस।''

उद्धव जी के गोकुल से चले जाने के बाद वे कहती हैं –

''आये उधो फिर गये आँगन,
डार गये गर फाँसी।
अँखियाँ हरिदर्शन की प्यासी;
देखो चाहत कमलनयन को,
निशदिन रहत उदासी...''

– भगवान् के प्रति प्रेम की पराकाष्ठा।

इस सुदीर्घ आयु में मुझे विभिन्न सम्प्रदायों के प्रातःस्मरणीय स्वनामधन्य सिद्ध संत–महात्माओं के पावन, पुनीत दर्शन और उनका शुभाशीर्वाद प्राप्त करने का अहोभाग्य प्राप्त हुआ है। पर, मुझे लिखते हुए संकोच हो रहा है – उनकी एक ही पीड़ा है कि उनको उत्तराधिकार के लिए लालायित तो बहुत लोग मिलते हैं; परन्तु इस घोर कलियुग में समर्पित योग्य शिष्य नहीं मिलते।

लोग अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए जहाँ–जहाँ भी जिस साधु–महात्मा अथवा देवता के चमत्कार के बारे में सुनते हैं, वहाँ–वहाँ दौड़–दौड़ कर जाते हैं और वहाँ अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए कई प्रकार की मनौतियाँ मनाते हैं। यदि दैव योग से अथवा प्रारब्ध कर्मों के उदय से कार्य सिद्ध हो गया, तो वह देवता, साधु उनके लिए सब कुछ हो गया और यदि मनौती पूरी नहीं हुई, तो वह उनकी दृष्टि में कुछ भी नहीं। यह तो दर्शन की अभिलाषा नहीं होकर कुछ और ही हो गया।

वर्तमान समय में हम देखते हैं कि प्रसिद्ध तीर्थस्थलों, जैसे तिरुपति बालाजी, वैष्णोदेवी, सालासर बालाजी, खाटूश्याम जी, साँवरिया सेठ, शिर्डी साईं बाबा, श्री नाथ जी आदि–आदि पर दर्शनार्थियों की भारी भीड़ का रेलपेल लगा रहता है। उनमें से कितने लोग भगवान् **के** दर्शन की अभिलाषा से जाते हैं और कितने लोग भगवान् **से** माँगने जाते हैं? सुधी पाठकों, आप विचार करके देखेंगे, तो पायेंगे कि दर्शन की अभिलाषा वाले भक्तों की संख्या नगण्य है। दर्शन तो भगवान् की अहेतुकी भक्ति के लिए ही करना चाहिए, ताकि हमें उनकी निरंतर कृपा प्राप्त होती रहे। यदि हमें भगवान् ही प्राप्त हो गये, तो हमारे लिए कुछ भी अप्राप्तव्य नहीं रहेगा।

मेरी आपसे करबद्ध विनम्र प्रार्थना है कि आप जो भी धर्मावलम्बी हों, किसी भी सम्प्रदाय के हों, आपका जो भी इष्ट देवता हो, गुरु हो, उस एक के ही शरणागत होकर, सम्पूर्ण निष्ठा, श्रद्धा, विश्वास के साथ उन्हें अंगीकार करके उनके उपरोक्त रीति से दर्शन लाभ लें, फिर देखिए क्या चमत्कार होता है!

– मदन गोपाल गोयल
प्राचार्य (सेवा निवृत्त)
श्री राम अयन, इन्द्रगढ़ – ३२३ ६१३, ज़िला बूंदी, राजस्थान.
ई–मेल : **gopalgoyal1963@gmail.com**
संचार ध्वनि : (०)९४६०५९४८९०, ७८९१७६३८८४, ८९४९४३७९३२

Shirdi News

Mohan Yadav
❊ **Public Relations Officer** ❊
Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi
- Translated from Marathi into English by
Vishwarath Nayar
E-mail : **vishwarathnayar@gmail.com**

Sunday, January 1, 2017 : Chief Minister of Madhya Pradesh Sri Shivraj Singh Chauhan with his wife, flanked by the Sansthan's Trustee Sri Sachin Tambe and Executive Officer Sri Bajirao Shinde…

Saturday, January 7, 2017 : Sri Ravindra Waikar, Minister of State for Housing, Higher and Technical Education, Maharashtra State with his family, flanked by the Sansthan's Executive Officer Sri Bajirao Shinde…

Tuesday, January 10, 2017 : NRI Sai devotee from America Smt. Seeta Hariharan donated US $ 25,000 for the free *Annadan* scheme of Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi, informed Sri Bajirao Shinde, Executive Officer of the Sansthan.

Talking about this Sri Shinde stated that the Sansthan unceasingly continued to carry on the work of *Annadan* started by Shri Sai Baba. The number of devotees coming for Shri Sai Baba's *Darshan* from all over the country and the world is growing day by day. The Sansthan has built a grand Prasadalaya on the 7 acres land owned by the Sansthan in the Nimgaon–Korhale jurisdiction to facilitate convenient partaking of the *Prasad* meal by devotees coming here. In 2018 the *Samadhi* of Shri Sai Baba will complete 100 years and hence October 1, 2017 to October 18, 2018 will be observed as 'Shri Sai Baba *Samadhi Shatabdi Mahotsav Varsh*'. Along with various facilities lined up by the Sansthan for Sai devotees coming for the *Darshan* of Shri Sai Baba's *Samadhi* during this period, free *Prasad* meal has been arranged from January 1, 2017.

Evoking very good response for this free *Prasad* meal scheme, Smt. Seeta Hariharan, NRI Sai devotee from America has donated three cheques for the *Annadan* scheme that include US $ 8,000 for Ram *Navami* on Tuesday, April 4, 2017, US $ 8,000 for *Guru Pournima* on Sunday, July 9, 2017 and US $ 9,000 for Sai *Punyatithi* on September 30, 2017 (all amounting to Indian rupees equivalent to 17 lakhs).

❍❍❍

Thursday, January 12, 2017 : Sai devotee Sri Bhausaheb Bhosale of Shirdi donated a 5.5 kg silver frame for the Photo of Shri Sai Baba in *Chavdi* in Shirdi.

Sri Bhosale along with his mother Smt. Tarabai Vishwanath Bhosale, wife

Sou. Hemlata Bhosale, children Rishikesh, Sagar, Shubham and Krishna handed over the silver frame weighing 5.5 kg and costing Rs. 3 lakh to Sri Sachin Tambe, Trustee of the Sansthan as a donation to the Sansthan.

Having donated three gold necklaces weighing 60 grammes earlier too, Sri Bhosale donated Rs. 51,000/- for the *Annadan* scheme and Rs. 51,000/- for medicines for the Shri Sai Baba Hospital. Sri Bhosale has always been in the forefront in social activities. Every year on October 17 he distributes free sari and grocery to poor women.

Thursday, January 12, 2017 : Sri Chadalvad Krishnamoorthy, chairman of the Tirumala Tirupati Devasthan Vishwast Mandal being felicitated by Sri Bajirao Shinde, Executive Officer of the Sansthan on behalf of the Sansthan after the *Darshan*…

Friday, January 13, 2017 : The renewed ISO-22000-2005 accreditation for Shri Sai Prasadalaya department run by the Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi – being received by Sri Bajirao Shinde, Executive Officer of the Sansthan, Sou. Yogitatai Shelke, Sansthan's Trustee and Chairperson of Shirdi Nagar Panchayat, Sri Keshav Murthy, donor Sai devotee and administrative officers Sri Dilip Ugale, Sri Suryabhan Game and Sri Uttamrao Gondkar…

Due to all the facilities at Shri Sai Prasadalaya, tasty and delicious *Prasad* meal is got in a clean and pleasant environment without waiting. The Prasadalaya is run by the Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi. Hence the Shri Sai Prasadalaya was issued the ISO-22000-2005 (Food Safety Management System) accreditation on 20.12.2016 for a further period of 3 years by Trans Pacific Certification Limited (TCL). This accreditation having been renewed from December 20, 2016 to December 19, 2017, its acceptance function was held on Friday, January 13, 2017 in the Shri Sai Prasadalaya. Sri Bajirao Shinde, Executive Officer of the Sansthan presided at the function and the prominent dignitaries present were donor Sai devotee Sri Keshu Murthy, Sou. Yogitatai Shelke, Sansthan's Trustee and Chairperson of Shirdi Nagar Panchayat and administrative officers Sri Suryabhan Game, Sri Dilip Ugale and Sri Uttamrao Gondkar and others. Donor Sai devotee Sri Keshu Murthy was felicitated on behalf of the Sansthan by Sri Bajirao Shinde, Executive Officer of the Sansthan on the occasion.

Speaking on the occasion Sri Shinde stated that the renewal of the ISO accreditation was done due to the efforts and hard work

of the employees of Shri Sai Prasadalaya. Nearly 40 to 45 thousand devotees avail the benefit of the *Prasad* in this Prasadalaya daily. It is indeed creditable that among the spiritual destinations all over the country, only the Sansthan's Shri Sai Prasadalaya has received the ISO accreditation. Hence the Sansthan's responsibility too has increased.

Sri Shinde informed that efforts are being made to seek ISO accreditation for the Sansthan's Shri Sai Bhakt Niwas Sthans like Shri Sai Prasadalaya. Sou. Yogitatai Shelke, Sansthan's Trustee and Chairperson of Shirdi Nagar Panchayat and donor Sai devotee Sri Keshu Murthy expressed their thoughts on the occasion and Sri Vishnu Thorat, chief of the Prasadalaya dept. gave the introductory address and thanked those present on the occasion.

❍❍❍

Monday, January 16, 2017 : Actor Sri Shreyas Talpade with the Trustee of the Sansthan Sri Sachin Tambe…

Wednesday, January 18, 2017 : Sri Vijay Kumar Choudhary, Chairman of Bihar Legislative Assembly with Sri Sachin Tambe, Trustee of the Sansthan…

Friday, January 20, 2017 : Industrialist Smt. Neeta Ambani with her son flanked by Sri Sachin Tambe, Sansthan's Trustee, Sansthan's Trustee and Chairperson of Shirdi Nagar Panchayat Sou. Yogitatai Shelke, Sri Bajirao Shinde, Executive Officer of the Sansthan and local councilor Sri Abhay Shelke…

Sunday, January 22, 2017 : Cine actor Sri Shatrughna Sinha with his wife flanked by Sri Chandrashekhar Kadam, Vice Chairman of the Sansthan, Trustees Adv. Mohan Jaykar and Sri Bhausaheb Wakchaure…

Saturday, January 28, 2017 : Cine actor Sri Jitendra and actress Ekta Kapoor with the Trustee of the Sansthan Sri Sachin Tambe…

Sunday, February 5, 2017 : Sri Prakash Mehta, Minister for housing, Maharashtra State with Sri Sachin Tambe, Trustee of the Sansthan…

Sunday, February 5, 2017 : Sri Rangarch Konda, Sai devotee from Bengaluru offering a golden crown weighing 173 grammes costing Rs. 4,63,965/- at the Feet of Shri Sai Baba flanked by Sri Sachin Tambe, Trustee of the Sansthan…

Thursday, February 9, 2017 : Sri Sachin Tambe, Trustee of the Sansthan informed that it was decided at a meeting of the deputy superintendent of police Dr. Sagar Patil, police inspector Sri Pratap Ingale and security inspectors of the Sansthan's security department that the temple premises will be got rid of the agents' menace by the joint efforts of Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi and the Shirdi police station like they made the premises pick-pocketers-free.

The meeting initiated under the leadership of the Sansthan's Trustee Sri Sachin Tambe for getting rid of agents in the temple premises like they got the area free of pick-pocketers was attended by deputy superintendent of police Dr. Sagar Patil, police inspector Sri Pratap Ingale and security inspectors of the Sansthan's security department, Sri Sanjay Patani, Sri Bhausaheb Ghegadmal, Sansthan's civil security squad, chief of the security agency and employees of the security department.

Speaking on the occasion Sri Sachin Tambe stated, "Agents misguide and cheat by giving false information to Sai devotees who come to Shirdi from all over the country and the world. This lets out a wrong message in the society. The Sansthan's administration and the Shirdi police station decided at a joint meeting to take stringet action against this menace of the agents. Just a few days ago the security squad started with assistance from the Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi and Shirdi police station was of great help to successfully put a stop to the pick-pocketing menace in the temple premises. This decision is being greeted by everybody. This is the first programme being implemented in any temple premises in the state. On the same lines Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi and Shirdi police station will strive jointly to keep watch on and tackle agents with the help of security squads in places like the *Chavdi*, Dwarkamai and other crowded places in the temple premises."

Dy. S. P. Dr. Sagar Patil stated on the occasion, "Shirdi police will always support this programme initiated by Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi. Strict action will be taken against anyone caught cheating Sai

devotees coming to Shirdi."

The strength of this squad will be increased during the *Samadhi* Centenary Year and units of this squad will be posted at all the residential locations and all places of the Sansthan.

❍❍❍

Thursday, February 9, 2017 : Sri Bajirao Shinde, Executive Officer of the Sansthan informed that 49 patients were given free treatment and surgery in the kidney stone surgery camp held recently with the assistance of Dr. Ketan Shukla, a renowned laser expert from Ahmedabad at the Shri Sai Nath Hospital run by Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi.

Sri Shinde stated that 70 patients had enrolled in the free kidney stone surgery camp held at the Shri Sai Nath Hospital. 1 to 1 1/2 cm stone was treated of 23 patients with sound waves (Lithotripsy), 14 patients were treated with telescopic surgery (Percutaneous Nephrolithotromy) (PCNL), (URS) surgery was done on 6 patients, (RGP-DJ Stenting) both types of surgery were done on 5 patients and Cystolithophexy surgery was done on 1 patient. For this renowned uro-surgeon from Ahmedabad Dr. Ketan Shukla and his associates, his ambulance theatre van with his whole team came to Shirdi and provided free treatment and surgery.

Dr. Ram Naik, general surgeon of Shri Sai Nath Hospital and the hospital's anaesthesists Dr. Manisha Shirsat, Dr. Mahendra Tambe, Dr. Govind Kalate, Dr. Kardil, and Dr. Survase as also surgeons who came from outside Dr. Dipak Najan and anaesthesist Dr. Pitambare offered honorarium service.

Dr. Vijay Narode, medical director of the hospital, Dr. Maithili Pitambare, medical superintendant, medical officers, assistant matron Smt. Najma Sayyad and employees under the guidance of Dr. Suresh Haware, Chairman of the Sansthan, Sri Chandrashekhar Kadam, Vice Chairman of the Sansthan, Trustees Sri Sachin Tambe, Adv. Mohan Jaykar, Sri Pratap Bhosale, Sri Bhausaheb Wakchaure, Sri Bipindada Kolhe, Dr. Rajendra Singh and Sou. Yogitatai Shelke, Sansthan's Trustee and Chairperson of the Shirdi Nagar Panchayat took special efforts for the success of the free kidney stone surgery camp.

❍❍❍

Thursday, February 9, 2017 : Smt. Celini Dolaroz, Sai devotee from Italy offered a 750 gm golden crown costing Rs. 23, 14, 550/- at the Feet of Shri Sai Baba. Sri Sachin Tambe, Trustee of the Sansthan was present on the occasion.

Monday, February 13, 2017 : Sri Praveen Singh Waghela, Sai devotee from Ahmedabad donated a Mahindra Bolero ambulance costing about Rs. 6,50,000/- to the Sansthan. Dr. Sandeep Aher, Deputy Executive Officer of the Sansthan accepting the keys of this ambulance. Sri Sachin Tambe, Trustee of the Sansthan and Sou. Yogitatai Shelke, Sansthan's Trustee and Chairperson of Shirdi Nagar Panchayat graced the occasion.

Tuesday, February 14, 2017 : Dr. Suresh Haware, Chairman of the Sansthan addressing at the seminar on 'Blood Bank' organised by the Sansthan in the presence of Sri Chandrashekhar Kadam, Vice Chairman of the Sansthan, Trustees Sri Pratap Bhosale, Sri Bhausaheb Wakchaure and Sri Sachin Tambe, Sou. Yogitatai Shelke, Sansthan's Trustee and Chairperson of Shirdi Nagar Panchayat and Dr. Sandeep Aher, Deputy Executive Officer of the Sansthan...

Wednesday, February 15, 2017 : Sansthan's Trustee Sri Sachin Tambe greeting 20 Sai devotees from Germany on behalf of the Sansthan...

Tuesday, February 21, 2017 : Government Pleader Adv. Ujjwal Nikam with Dr. Sandeep Aher, Deputy Executive Officer of the Sansthan...

Thursday, February 23, 2017 : Padmashree awardee Sri Kannubhai Tailor, founder of Disable Welfare of India Sanstha in Surat with 225 disabled students with Sri Mohan Yadav, public relations officer of the Sansthan having *Darshan* at the *Samadhi Mandir* ...

Monday, February 27, 2017 : Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi's Managing Committee having decided to give 100 ambulances under the Sai Ambulance Scheme on behalf of the Sansthan to NGOs working in tribal, remote and backward hilly regions of Maharashtra in the first phase in April and May 2017, Dr. Suresh Haware, Chairman of the Sansthan has appealed to all NGOs working in these regions to apply to the Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi with all requisite papers for the same.

At the meeting presided by Dr. Haware, Sri Chandrashekhar Kadam, Vice Chairman of the Sansthan, Trustees Sri Bhausaheb Wakchaure, Sri Sachin Tambe, Sri Pratap Bhosale and Adv. Mohan Jaykar, Sou. Yogitatai Shelke, Sansthan's Trustee and Chairperson of Shirdi Nagar Panchayat, Sri Bajirao Shinde, Executive Officer and others were present.

Dr. Haware further stated that this application will be available on the Sansthan's website : www.sai.org.in from March 1, 2017. Also the NGO's turnover in the last 3 years should be minimum Rs. 5 lakhs.

75 per cent of the cost of the ambulance will be provided by the Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi from the donation of Sai devotee donors and the balance 25

per cent has to be deposited by the NGO with the Sansthan. Also the NGO has to register the ambulance in their respective district and show financial assistance from the Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi and the Sai devotee donor. All these ambulances will ply all over Maharashtra in the name of Sai Ambulance and will be managed by the respective NGO.

Monday, February 27, 2017 : Cine actress Smt. Jaya Prada...

Tuesday, February 28, 2017 : Dr. Suresh Haware, Chairman of the Sansthan, informed that the Managing Committee of the Sansthan has decided to pay Rs. 6,05,87,000/- as grant for people's contribution for the water supply scheme sanctioned under the *Amrut Yojana* supported by the Central Government to the Shirdi Nagar Panchayat on behalf of the Shree Saibaba Sansthan Trust, Shirdi.

At the meeting presided by Dr. Haware, Sri Chandrashekhar Kadam, Vice Chairman of the Sansthan, Trustees Sri Bhausaheb Wakchaure, Sri Sachin Tambe, Sri Pratap Bhosale and Adv. Mohan Jaykar, Sou. Yogitatai Shelke, Sansthan's Trustee and Chairperson of Shirdi Nagar Panchayat, Sri Bajirao Shinde, Executive Officer and others were present.

Dr. Haware stated that the Shirdi Nagar Panchayat has mentioned in a letter to the Sansthan that Shirdi has earned the status of an international pilgrimage center due to Shri Sai Baba. Sai devotees throng to Shirdi in very large numbers daily for the *Darshan* of Shri Sai. 75,000 to 1 lakh Sai devotees come to Shirdi daily for *Darshan* and during festive occasions the number goes up to 2 lakh. There are a noticeable number of devotees from abroad too among them. Sai devotees coming to Shirdi stay at various hotels, lodges and other places. The economic burden of providing civic amenities to these Sai devotees falls upon the Shirdi Nagar Panchayat. Hence the Shirdi Nagar Panchayat asked the Sansthan to pay Rs. 9.162/- crores as grant to the Shirdi Nagar Panchayat for paying the people's contribution for the water supply scheme sanctioned by the Central Government to the Shirdi Nagar Panchayat under the *Amrut Yojana*. Having deliberated on this demand and deciding to pay the required Rs. 6,05,87,000/- out of the Rs. 9.162/- crores demanded in the form of a grant from the Sansthan, every citizen of Shirdi will get 135 litres of water daily because of this scheme.

❍❍❍

(Contd. from page 13)

Kalamkar, Chandrakant Surve, Namdev Bhogle, Bhaskar Parab, Sidney D'souza, Sachin Savant, Vivek Acharya, Ambavi Patel, Chandrakant Lokhande, Shrikant Kharatmol, Rupesh Parab, Amit Morkar, Pankaj Salvi, Tushar Nalawade, Domnic Fernandis, Monti Dore, Abhijeet Pisal, Rajesh Mohite, Sunil Mohite, Anil Mohite, Anil Sathe, Govind Patel, Gautam Patel, Balaji Khot, Vishnu Palan, Chandrakant Dhadke, Kumar Uttarkar, Mo. Ashfak Shaikh, Eldrin. F. D'souza, Mrs. Nancy Laurence D'souza, Mrs. Ranjana S. Gharat, Mrs. Sugandha R. Kharvilkar, Mrs. Ankita Melvin D'souza and others have made valuable contribution towards this service.

As told by **Mr. Laurence D'souza**
E-mail : **tellisdsouza@gmail.com**
Mobile : (0)**9833693112**
Penned by **Mrs. Mayuri Mahesh Kadam**
E-mail : **saimayumahesh@gmail.com**
Mobile : **(0)9833998794**
Translated from Marathi by **Meenal Vinayak Dalvi**
E-mail : **meenalvd567@yahoo.co.in**
Mobile : **(0)9226945333**

❍❍❍

In the evening of Sunday, January 1, 2017

RNI Regd. No. MAH/BIL/2000/8048

SHRI SAI LEELA

Date : 15th February 2017

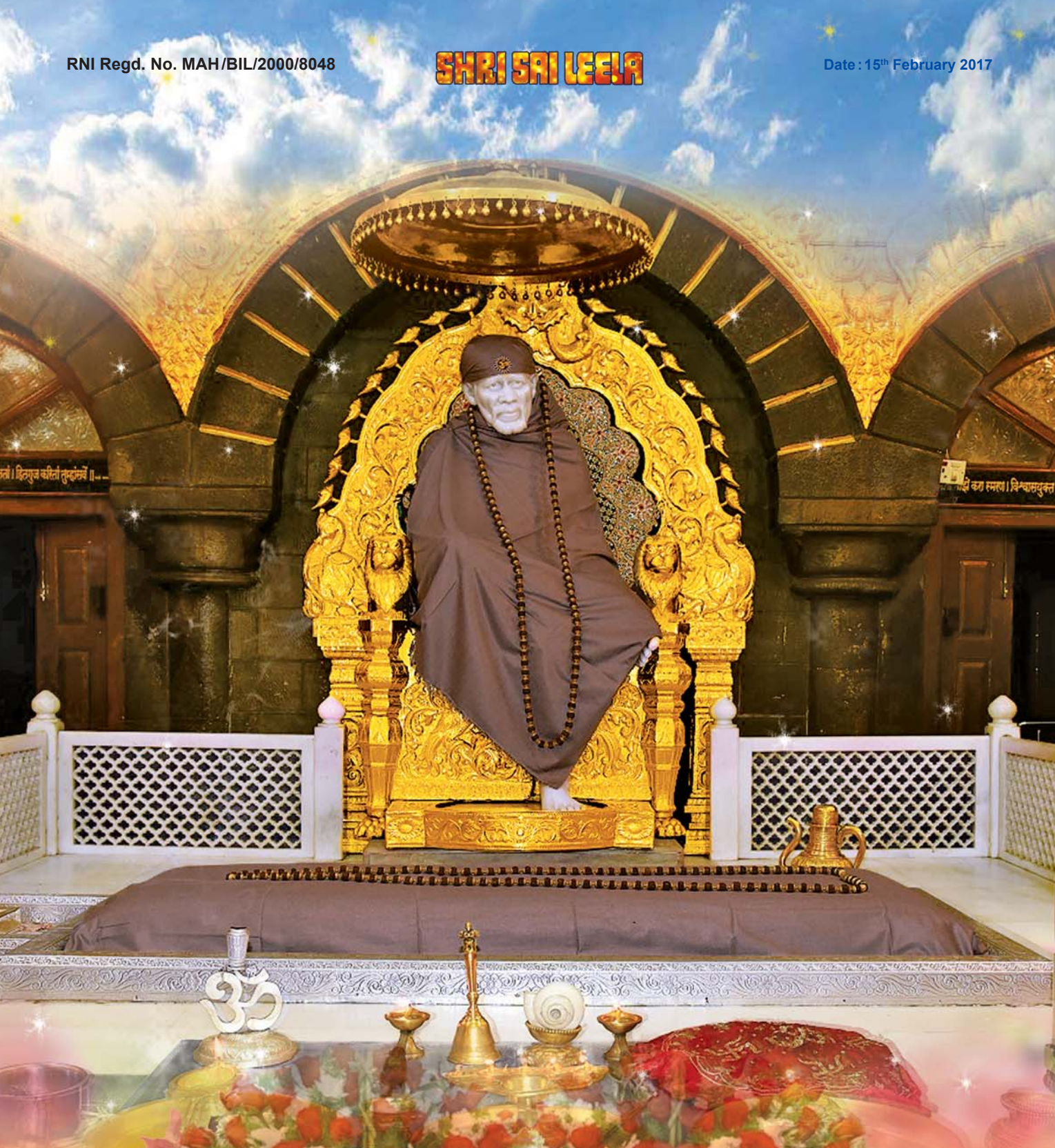

In the night of Sunday, January 1, 2017

श्री साईं बाबा संस्थान विश्वस्त-व्यवस्था (शिर्डी) के लिए संस्थान के कार्यकारी अधिकारी द्वारा मे. टैको व्हिजन्स प्रा. लि., १०५ ए, बी, सी, गवर्नमेंट इन्डस्ट्रियल इस्टेट, चारकोप, कांदिवली (प.), मुम्बई - ४०० ०६७ में मुद्रित और साईं निकेतन, ८०४ बी, डा. आम्बेडकर रोड़, दादर, मुम्बई - ४०० ०१४ में प्रकाशित। सम्पादक : कार्यकारी अधिकारी, श्री साईं बाबा संस्थान विश्वस्त-व्यवस्था, शिर्डी